ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

भादों-आश्विन संवत् नानकशाही ५५५ सितंबर 2023 वर्ष १७ अंक १

सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब

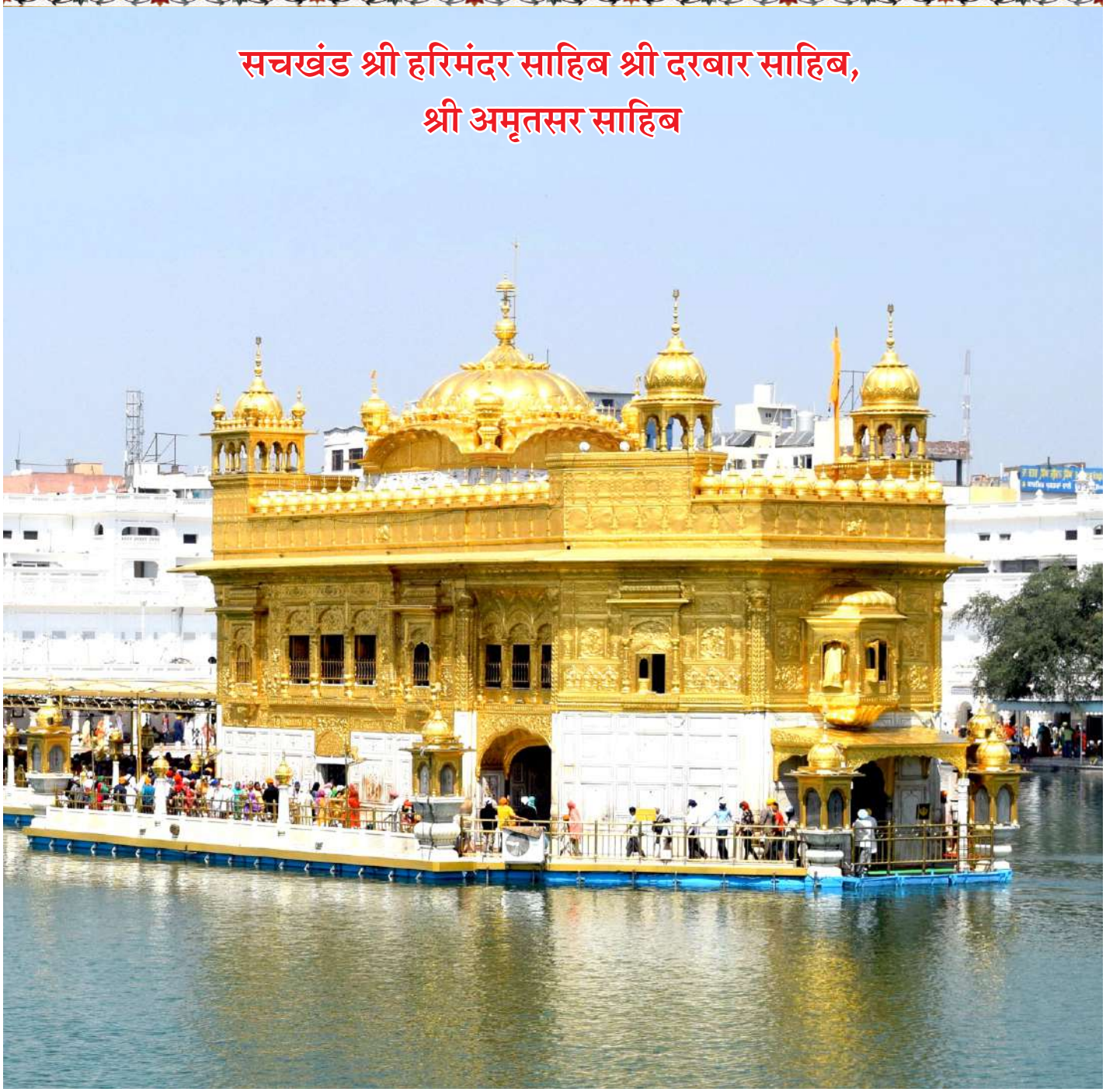

गुरुद्वारा श्री रामसर साहिब, श्री अमृतसर साहिब

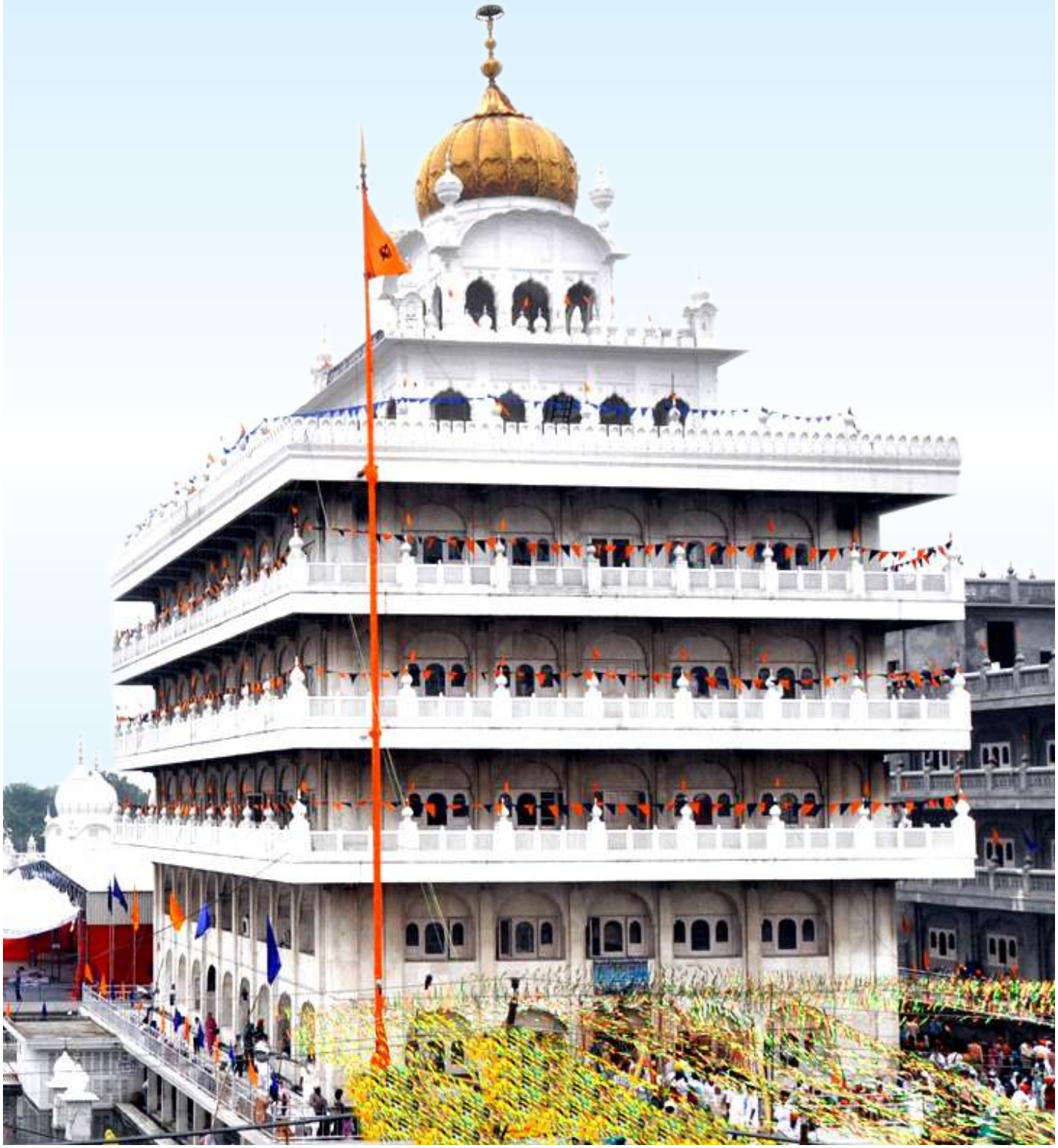

ੴ सतिगुर प्रसादि॥
गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

भादों-आश्विन संवत् नानकशाही 555
वर्ष 17 अंक 1 सितंबर 2023

संपादक : सतविंदर सिंह
सहायक संपादक : जगजीत सिंह

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
महान सूफी संत : भक्त शेख फरीद जी 7
-डॉ. मनजीत कौर
. . . भाई महिताब सिंघ एवं भाई सुक्खा सिंघ 15
-डॉ. कशमीर सिंघ नूर
. . . सारागढ़ी की जंग 18
-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
सेलुलर जेल अंडमान : पंजाब के स्वतंत्रता संग्रामी-२ 22
-डॉ. परमवीर सिंघ
महाकवि भाई संतोख सिंघ : एक परिचय 32
-डॉ. गुरमुख सिंघ
. . . विचि बाणी अंम्रितु सारे॥ 36
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
गुरबाणी इसु जग महि चानणु 42
-डॉ. परमजीत कौर
सिक्ख धर्म और सूफी मत 47
-डॉ. नरेश
परोपकारी भाई घन्हईआ जी (कविता) 48
-स. करनैल सिंघ सरदार पंछी
खबरनामा 49

गुरबाणी विचार

असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीऐ हरि जाइ ॥
मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइ ॥
संत सहाई प्रेम के हउ तिन कै लागा पाइ ॥
विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ दूजी नाही जाइ ॥
जिन्ही चाखिआ प्रेम रसु से त्रिपति रहे आघाइ ॥
आपु तिआगि बिनती करहि लेहु प्रभू लड़ि लाइ ॥
जो हरि कंति मिलाईआ सि विछुड़ि कतहि न जाइ ॥
प्रभ विणु दूजा को नही नानक हरि सरणाइ ॥
असू सुखी वसंदीआ जिना मइआ हरि राइ ॥८॥ *(पन्ना १३४)*

पंचम सतिगुरु श्री गुरु अरजन देव जी बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में आश्विन मास की ऋतु और इसके प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक वातावरण के प्रसंग में जीव-स्त्री को प्रभु-नाम के साथ जुड़कर मानव जीवन का अमूल्य अवसर सफल करने का गुरमति मार्ग प्रदान कर रहे हैं।

गुरु जी जीव-स्त्री को आध्यात्मिक दिशा देने हेतु उसका प्रतिनिधित्व करते हुए कथन करते हैं कि भादों माह की उमस के बाद आश्विन मास में आई सुहावनी मीठी ऋतु में मेरे अंदर पति-परमात्मा के लिए प्रेम का उछाल आ रहा है। मेरे मन में यह ख्याल आता है कि जैसे भी हो किसी न किसी तरह ऐसे सुहावने मौसम में मैं प्रभु-पति से जाकर मिलूं। हे मेरी मां! मेरे मन एवं शरीर में अर्थात् मेरे समस्त अस्तित्व में परमात्मा-पति के दीदार की प्यास प्रबल हो गई है। संत-जन, जो प्रभु-प्रेम बढ़ाने में मददगार होते हैं, मैं उनके चरणों के साथ जुड़ी हूं, इसलिए मुझे अनुभव हो गया है कि प्रभु-पति के बगैर जीव-स्त्री सच्चा सुख अथवा आत्मिक आनंद प्राप्त नहीं कर सकती।

सतिगुरु जी कथन करते हैं कि जिन जीवों ने प्रभु-प्रेम का रस चख लिया है वे सदैव संतुष्ट-भाव में रहते हैं अर्थात् उनको सांसारिक इच्छाएं दुखित नहीं करती। वे 'स्व' का परित्याग कर देते हैं और सदैव यही विनती करते रहते हैं कि हे प्रभु! हमको अपने साथ जोड़े रखना अर्थात् अपने नाम-सिमरन में लगाए रखना। जिस जीव-स्त्री को परमात्मा-पति का सान्निध्य प्राप्त हो गया है वह उससे बिछड़ कर अन्य कहीं नहीं जाती, हे नानक! उसको भली-भांति अनुभव हो जाता है कि परमात्मा के बगैर कोई अन्य ठिकाना नहीं है। आश्विन मास की मीठी-मीठी ऋतु अनुभव वही जीव-स्त्रियां आत्मिक सुख अनुभव करती हैं जिन पर परमात्मा रूप राजा-पति की कृपा होती है।

संपादकीय

कहते पवित्र सुणते सभि धंनु . . .

परमात्मा ने धर्म कमाने हेतु 'धरती धरमसाल' (धर्मशाला) की सृजना की। परमात्मा के इस मिशन की पूर्ति के लिए श्री गुरु नानक देव जी पातशाह ने 'घरि घरि अंदरि धरमसाल' का मिशन प्रारंभ किया और गुरबाणी को इस मिशन का आधार बनाया। गुरबाणी ने मानवीय जीवन का आधार तभी बनना था यदि इसका उच्चारण आम लोगों की बोलचाल की भाषा में किया जाता। गुरु साहिबान ने आम लोगों की जुबान में गुरबाणी उच्चारण कर सदियों से आध्यात्मिक पक्ष से बंजर हो चुके मानवीय हृदयों को नाम-अमृत से सरशार किया। गुरु साहिबान रूहानियत के खज़ाने- गुरबाणी को सदैवकालीन संभालने हेतु साथ-साथ लिखित रूप भी देते रहे। श्री गुरु अरजन देव जी ने आध्यात्मिक ज्ञान के स्रोत श्री गुरु ग्रंथ साहिब को उद्यत कर मानवता के उद्धार हेतु बड़ा उपकार किया। प्रभु का नाम-सिमरन करने वालों के जीवन पवित्र हो गए, नाम सुनने वाले धन्य हो गए और जिन्होंने प्रभु-यश हाथों से लिखा उनका कुल सहित उद्धार हो गया :

कहते पवित्र सुणते सभि धंनु लिखतीं कुलु तारिआ जीउ।। *(पन्ना ८१)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना से पहले वेदों का ज्ञान संस्कृत भाषा में होने के कारण समाज के एक खास वर्ग तक सीमित होकर रह गया था और यह जनसमूह के जीवन का आधार न बन पाया, इसलिए मानवीय हृदयों में से अज्ञानता की दीवार टूट न सकी। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना के साथ सारी सृष्टि गा उठी-- ''देखौ भाई ग्यान की आई आंधी ॥ सभै उडानी भ्रम की टाटी रहै न माइआ बांधी ॥'' इस गुरबाणी रूपी ज्ञान की आंधी के कारण सामाजिक स्तर पर वहमों-भ्रमों की दीवार टूट गई तथा आत्मिक स्तर पर मानवीय हृदयों में से अहंकार (अज्ञानता) की कठोर दीवार भी टूट गई, ''धन पिर का इक ही संगि वासा'' का एहसास हुआ। अब प्रभु-प्राप्ति के लिए जंगलों, कंद्राओं में जाने की ज़रूरत न रही। परमात्मा के 'धरती धरमसाल' तथा गुरु जी के 'घरि घरि अंदरि धरमसाल' का सपना साकार हुआ।

सिक्खों के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब मात्र एक धार्मिक ग्रंथ ही नहीं बल्कि सिक्खों के जागत-ज्योति गुरु हैं। गुरसिक्ख का श्री गुरु ग्रंथ साहिब के साथ पुत्र व पिता वाला रिश्ता है। जिस प्रकार पारिवारिक मर्यादा में रहकर सांसारिक पिता की खुशी हासिल होती है उसी प्रकार

पंथक मर्यादा में रहकर गुरु-पिता श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बख्शिश का पात्र बन जाता है ।

गुरु साहिबान के हम पर बहुत-से उपकार हैं । गुरबाणी की स्वस्थ जीवन-जाच अपनाकर गुरसिक्खों ने देश-विदेश में, हर क्षेत्र में अपनी मेहनत, लग्न, ईमानदारी तथा काबलियत का लोहा मनवाया है। गुरबाणी सदका जो सम्मान गुरसिक्खों को हासिल हुआ है वो शायद किसी अन्य के पास नहीं। गुरसिक्ख जब गुरबाणी का पाठ करता है तो उसकी रसना में से हू-ब-हू वे शब्द निकलते हैं जो कभी गुरु साहिबान की रसना में से निकले थे। इस प्रकार गुरसिक्ख की ''प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥'' वाली अवस्था बन जाती है तथा ''मनु तनु रता रसना रंगि चलूली'' के अनुसार गुरसिक्ख की आत्मा तथा शरीर प्रभु-नाम के रंग में रंग जाते हैं। गुरसिक्ख का जीवन आनंदमय हो जाता है।

गुरु साहिबान ने हमारे साथ घनिष्ठता स्थापित करने के लिए लोक-भाषा- पंजाबी में गुरबाणी उच्चारण की, इसलिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब तथा पंजाबी बोली का अटूट सम्बंध है । हमारे लिए पंजाबी बोली मात्र बोली ही नहीं, यह हमारी गुरु-पिता के साथ बातें करने के लिए जुबान है, यह हमारे गुरु-पिता की बातें सुनने वाले कान हैं। गुरमुखी लिपि हमारी गुरबाणी पढ़ने वाली आंखें हैं ।

किंतु आज हम सब पंजाबी भाषा तथा गुरमुखी लिपि से दूर होकर गुरु-पिता श्री गुरु ग्रंथ साहिब के साथ बातें करने तथा गुरु की बात सुनने में लाचार नज़र आ रहे हैं। हमारी नई पीढ़ी की पंजाबी भाषा के प्रति उदासीनता के कारण अपने शबद-गुरु से निरंतर बढ़ रही दूरी हमारे लिए चिंता एवं चिंतन का विषय है। बेशक हमें आज विश्व स्तर पर विचरण करने के लिए दूसरी भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक है किंतु अपनी मातृ-भाषा- पंजाबी को भूलना अपने गुरु से बेमुख होना है। जैसे-जैसे हम पंजाबी भाषा से दूर होते जाएंगे तैसे-तैसे हमारी गुरबाणी की अमूल्य निधि से निकटता कम होती जाएगी। हमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब को पूर्ण रूप से समर्पित होने के लिए जहां उसमें दर्ज बाणी के साथ जुड़ने की आवश्यकता है वहीं यह सब तभी संभव हो सकेगा यदि हम अपनी पंजाबी भाषा के साथ जुड़े रहेंगे ।

महान सूफी संत : भक्त शेख फरीद जी

*-डॉ. मनजीत कौर**

भारतीय साहित्य एवं धार्मिक इतिहास में धार्मिक पुरुष हेतु 'संत' शब्द प्रयुक्त होता है। साधारण बोलचाल में भक्त, साधु अथवा महात्मा को भी संत रूप माना जाता है। चिन्तकों के चिन्तनानुसार 'संत' अर्थात् 'शुद्ध अस्तित्व', जो कि परमात्मा से जा मिलता है और जिसका कभी विनाश नहीं होता।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 'संत' की ईश्वर में एकरूपता एवं निजी रूप से समरसता की स्थिति का बड़ा सुंदर वर्णन किया गया है :

रैणि दिनसु रहै इक रंगा।।
प्रभ कउ जाणै सद ही संगा।।
ठाकुर नामु कीओ उनि वरतनि।।
त्रिपति अघावनु हरि कै दरसनि।।१।।
हरि संगि राते मन तन हरे।।
गुर पूरे की सरनी परे।।१।। रहाउ।।
चरण कमल आतम आधार।।
एकु निहारहि आगिआकर।।...
हरख सोग दुहहूं ते मुकते।।
सदा अलिपतु जोग अरु जुगते।।
दीसहि सभ महि सभ ते रहते।।
पारब्रहम का ओइ धिआनु धरते।।३।।
संतन की महिमा कवन वकानउ।।
अगाधि बोधि किछु मिति नही जानउ।।
पारब्रहम मोहि किरपा कीजै।।
धूरि संतन की नानक दीजै।। (पन्ना १८१)

भक्त की पवित्र एवं रूहानी आत्मिक उच्चावस्था तथा शुद्ध नैतिक आचरण दर्शाते हुए श्री गुरु अमरदास जी का पावन फरमान है :

भगता की चाल निराली।।
चाला निराली भगताह केरी
बिखम मारगि चलणा।।...
कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली।।
(पन्ना ९१८)

डॉ. जोध सिंघ के चिन्तनानुसार, व्यक्ति के समक्ष अक्सर दो तरह के उद्देश्य होते हैं– या तो वह सांसारिक सुखों की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन-शक्ति जगाता है या फिर वह पारलौकिक सुख एवं आनंद हेतु साधना करता है।

उत्तरी भारत के धर्म-साधकों में निर्गुण की उपासना करने वालों को 'संत' तथा सगुण अर्थात् अवतारों की लीला गायन करने वालों को 'भक्त' संज्ञा से अभिहित किया जाता है। ९वीं तथा १०वीं शताब्दी से ही मुगल आक्रमणकारियों के साथ सूफी संतों ने भारत में आना प्रारंभ किया। निर्गुणमार्गी संत केवल ज्ञान को ही प्रभु-मिलाप का आधार न मान कर प्रेम-

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

मार्ग को अपनाने की बात किया करते थे। इनमें से ही पंजाब में चिश्ती संप्रदाय से सम्बन्धित सूफी संत बाबा शेख फरीद जी तथा उनके पश्चात् साँई शाह हुसैन, साँई बुल्लेशाह, कुतुबन मंझन तथा मलिक मुहम्मद जायसी आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

वस्तुत: इस मार्ग पर चलने वालों के लिए कुछ नियम हैं – मुरशिद (गुरु) एवं बुजुर्गों की सेवा, कुरान के नियमों की पालना, रोज़े रखना, पाँच वक्त की नमाज अदा करना आदि। विद्वानों के चिन्तनानुसार सूफी सिद्धांत का प्रमुख गुण मानवीय प्रेम से ईश्वरीय प्रेम की ओर अग्रसर होने का संकल्प है, जिससे धर्म के नियमों की पालना करते हुए सूफी इश्क मजाजी से इश्क हकीकी तक का सफर तय करता है और अन्तत: ईश-प्राप्ति उसकी मंजिल है। इस संदर्भ में बाबा शेख फरीद जी की बाल्यावस्था से सूफी संत तक की आध्यात्मिक यात्रा का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है :-

जन्म एवं बचपन : भक्त शेख फरीद जी के जीवन से सम्बंधित ऐतिहासिक लिखित प्रमाण बहुत कम मिलते हैं, लेकिन उन्हें विश्वसनीय इसलिए मान लिया गया है, क्योंकि थोड़े-बहुत अन्तर के साथ ये आपस में मिलते-जुलते हैं।

अधिकतर विद्वानों द्वारा भक्त शेख फरीद जी का जन्म ११७३ ई. में जमालुद्दीन सुलेमान तथा बीबी मरियम के घर गांव कोठेवाल, जिला मुलतान में मोहर्रम की पहली तारीख को हुआ माना जाता है। इस पवित्र दिन के कारण ही उनका नाम 'फरीदुद्दीन मसऊद' रखा गया।

'होनहार बिरवान के होत चिकने पात' हिंदी की प्रसिद्ध कहावत का अर्थ है कि होनहार बालक की छवि पालने में ही दिख जाती है। भक्त शेख फरीद जी बचपन से ही अन्य बालकों की अपेक्षा अलग स्वभाव के मालिक, तीक्ष्ण बुद्धि वाले तथा गम्भीर प्रवृत्ति के थे। साथ ही धार्मिक प्रवृत्ति वाली पवित्र नेक हृदया माँ बीबी मरियम ने नेक विचारों एवं अत्यन्त समझदारी तथा दरवेशी ढंग से भक्त शेख फरीद जी की परवरिश की। बेशक भक्त शेख फरीद जी के सिर से पिता का साया बचपन में ही उठ गया था, लेकिन भक्त शेख फरीद जी की माता ने पालन-पोषण की पूरी जिम्मेदारी निभाते हुए उन्हें नमाज अदा करने हेतु भी प्रेरित किया। फलस्वरूप बचपन में ही भक्त शेख फरीद जी ने कुरान कंठस्थ कर लिया।

संतों की संगति एवं आशीर्वाद : भक्त शेख फरीद जी ने प्रारम्भिक शिक्षा अपने गांव में ही प्राप्त की। इसके उपरान्त आपको मुलतान भेजा गया। वहां मौलाना मिनहाजुद्दीन तिरमिजी से मस्जिद के मदरसे में अपने औपचारिक शिक्षा ग्रहण की। सूफी संतों की संगति एवं आशीर्वाद आपको बहुतायत में प्राप्त हुआ।

'बाबा शेख फरीद रत्नावली' की संपादिका ने मुलतान में भक्त शेख फरीद जी की गुरु से मिलाप की घटना का जिक्र करते हुए लिखा है कि एक बार भक्त शेख फरीद जी मुस्लिम कानून का 'नाफिया' पढ़ रहे थे। तभी ख्वाजा

कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी मुलतान में तशरीफ लाए। भक्त शेख फरीद जी उस समय मस्जिद में बैठे 'नाफिया' पढ़ रहे थे। ख्वाजा ने नमाज़ अदा करने के बाद पास बैठे भक्त शेख फरीद जी से प्यार से पूछा, ''मौलाना कौन-सी किताब पढ़ रहे हैं?'' भक्त शेख फरीद जी ने उतर दिया, ''नाफिया।'' ख्वाजा ने आशीर्वाद दिया, ''खुदा रहमो-करम फरमाए आपको! इस मुतअल्लिक नफा हो।'' इस छोटी-सी मुलाकात ने भक्त शेख फरीद जी के अंदर ज्ञान का दीया जला दिया।

आपके हृदय में छिपी ईश्वरीय लगन को भांपते हुए आपके आध्यात्मिक गुरु बख्तियार काकी ने आपको और बंदगी करने हेतु प्रेरित किया। गुरु का आदेश पाकर सब कुछ त्याग कर भक्त शेख फरीद जी गहन बंदगी एवं साधना हेतु हांसी (हरियाणा) आ गए। लगभग १८ वर्ष वहां पर आपने प्रभु-बंदगी की। इस कठोर साधना एवं तप के फलस्वरूप आपकी उच्चावस्था एवं अनेक गुणों के कारण सत्कार की भावना से आपके गुरु आपको धर्म की माला का सबसे कीमती मोती कह कर बुलाते थे। अपने गुरु के परलोक सिधारने पर आपको चिश्ती संप्रदाय का नेतृत्व सौंपा गया।

गृहस्थ धर्म के साथ-साथ समाज-सेवा का भाव : इस संदर्भ में श्री गुरु अरजन देव जी का पावन फरमान है :

सरब धरम महि स्रेसट धरमु।।
हरि को नामु जपि निरमल करमु।।(पन्ना २६६)

अर्थात् समस्त धर्मों में श्रेष्ठ धर्म यही है कि निर्मल कर्मों को करते हुए प्रभु-नाम का जाप करना चाहिए। जब दुनिया में कोई व्यक्ति नेक कर्म करते हुए प्रभु का नाम जपता है तो उसका कर्म ही धर्म बन जाता है। इस संदर्भ में अगर भक्त शेख फरीद जी के विलक्षण जीवन पर दृष्टिपात करें तो स्पष्ट होगा कि उन्होंने गृहस्थ धर्म का पूर्णतया पालन करते हुए अपना सब कुछ परोपकार एवं सेवा-कार्य हेतु न्योछावर कर दिया। उनका सादा जीवन और उच्च विचार तथा त्याग की अनुपम मिसाल संसार के लिए प्रेरणा-स्रोत है।

भक्त शेख फरीद जी का जीवन : सेवा, दया, करुणा, त्याग, विनम्रता, शांति एवं मधुरता जैसे गुणों से भरपूर आपका जीवन लोगों को स्वत : ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेता। ईश्वर-भक्ति में लीन रहते हुए सेवा एवं परोपकार हेतु सदैव तत्पर रहना यह दरवेश (संत) पदवी पाने का सहज मार्ग है। चिन्तकों ने इसे मानव जीवन का परम उद्देश्य एवं चरम लक्ष्य बताया है। चूंकि गुरु के बिना इस मार्ग पर चला नहीं जा सकता, इसलिए भक्त शेख फरीद जी ने कलियुगी जीवों को समझाया कि इस मार्ग पर झूठ के आश्रय द्वारा नहीं चला जा सकता, अत: सत्य-मार्ग के अनुगामी बनकर गुरु-दर्शाये मार्ग पर चल कर ही यह जीवन सफल हो सकता है। इस संदर्भ में भक्त शेख फरीद जी का फरमान है :

बोलीऐ सचु धरमु झूठु न बोलीऐ।।
जो गुरु दसै वाट मुरीदा जोलीऐ।।(पन्ना ४८८)

यहीं नहीं, उन्होंने यह भी समझाया कि दुनिया में विचरण करते हुए, समरूप रहते हुए, ईश्वरीय रजा को सर्वोपरि मानते हुए उसमें हर हाल में सदैव प्रसन्न रहना चाहिए :

फरीदा दुखु सुखु इकु करि
दिल ते लाहि विकारु।।
अलह भावै सो भला तां लभी दरबारु ।।

(पन्ना १३८३)

भक्त शेख फरीद जी ने गृहस्थ धर्म का निर्वहन करते हुए हक की कमाई करके, परमात्मा का सिमरन करते हुए मानवता की सेवा का पावन उपदेश दिया। उनकी बाणी में स्पष्ट हिदायत है कि ईश्वर-प्राप्ति हेतु घर त्याग कर वन में जाकर प्रभु की तलाश करना सर्वथा व्यर्थ है :

फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि
वणि कंडा मोड़ेहि।।
वसी रबु हिआलीऐ जंगलु किआ ढूढेहि।।

(पन्ना १३७८)

गुरबाणी में अन्यत्र भी गृहस्थ धर्म की महानता दर्शायी गई है, जिसमें कमल सदृश्य माया रूपी कीचड़ में रहते हुए भी निर्लेप भाव से रहने की शिक्षा दी गई है। भक्त शेख फरीद जी ने भी गृहस्थी होते हुए आजीवन दरवेश का जीवन व्यतीत किया।

आत्म-चिन्तन : भक्त शेख फरीद जी की बाणी आत्मचिन्तन का मार्ग दर्शाती है। उनके चिन्तनानुसार स्वयं के सुधार से ही आदर्श मानव की सृजना होती है और आदर्श मानव ही दूसरों का मार्गदर्शन करने में सक्षम होता है।'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' अर्थात् दुनिया में दूसरों को उपदेश देने वाले तो बहुत होते हैं, लेकिन उन पर अमल करने वाले कोई विरले होते हैं। भक्त शेख फरीद जी का पावन संदेश है कि मनुष्य को सर्वप्रथम अपने अवगुणों को देखना चाहिए और उन्हें दूर करना चाहिए। भक्त शेख फरीद जी का कथन है :

फरीदा काले मैडे कपड़े काला मैडा वेसु।।
गुनही भरिआ मै फिरा लोकु कहै दरवेसु।।

(पन्ना १३८१)

आत्मचिन्तन की यह पराकाष्ठा है। जब भक्त शेख फरीद जी उपरोक्त सलोक में कथन करते हैं कि मैंने फकीरों की तरह काले वस्त्र पहन कर सूफियों वाला वेश तो धारण कर लिया है, मगर मैं जानता हूं कि मेरी आत्मा अभी अपराधों के भार से मुक्त नहीं हुई, बेशक लोगों ने मुझे दरवेश मान लिया है। अतः अवगुणों का त्याग कर गुणों को आत्मसात करना चाहिए अन्यथा ईश्वर के दरबार में लज्जित होना पड़ेगा। इस संदर्भ में उनका संदेश है कि जिन कामों में गुण नहीं, उन्हें त्याग देना चाहिए, ताकि ईश्वर के दरबार में शर्मिंदा न होना पड़े :

फरीदा जिन्ही कंमी नाहि गुण ते कंमड़े विसारि।।
मतु सरमिंदा थीवही सांई दै दरबारि।।

(पन्ना १३८१)

आत्मचिन्तन करने से यह सूझ पैदा होती है कि संसार में केवल मैं ही दुखी नहीं, सारा संसार ही दुखी है। इंसानी फितरत है कि वह

अपनी अपेक्षा हमेशा दूसरों को ही सुखी समझता है, इसी कारण अधिक दुखी रहता है। ऐसे लोगों का मार्गदर्शन करते हुए भक्त शेख फरीद जी का कथन है :

फरीदा मै जानिआ दुखु मुझ कू
दुखु सबाइऐ जगि।।
ऊचे चड़ि कै देखिआ तां घरि घरि एहा अगि।।
(पन्ना १३८२)

जब मनुष्य आत्मचिन्तन करता है तब उसका हृदय रूपान्तरित होने लगता है। तब वह शिकायत नहीं शुक्राना करता है और शुक्राना करने वाला कभी दुखी नहीं हो सकता।

नैतिकता से ओत-प्रोत भक्त शेख फरीद जी की बाणी : नैतिकता मनुष्य को सही दिशा प्रदान करती हुई निषेध एवं ग्रहण की प्रवृत्ति का बोध करवाती है अर्थात् इस संसार में विचरण करते हुए किस प्रकार के कर्मों को त्यागना है और किस प्रकार के कर्म करने हैं। वैसे भी समाज की सांस्कृतिक श्रेष्ठता का मापदण्ड उस समाज के लोगों का नैतिक जीवन है। नैतिकता का प्रमुख तत्व आचरण माना गया है और यह ज्ञान से सम्भव है, क्योंकि मोह-माया में निमग्न हुए व्यक्ति में नैतिकता का सूर्य उदित ही नहीं हो सकता। ज्ञान के अभाव में व्यक्ति सदैव भ्रमित ही रहता है।

विविध युगों में समय-समय पर दार्शनिकों एवं चिन्तकों ने जन-जन को प्रबोधित किया। नैतिकता के परिप्रेक्ष्य में अगर भक्त शेख फरीद जी की बाणी का गहराई से अध्ययन करें तो यह तथ्य उभर कर सामने आता है कि सूफी संत शेख फरीद जी की सम्पूर्ण बाणी नैतिकता से ओत-प्रोत है। उन्होंने कट्टरवादिता एवं संकीर्णता से परे प्रचलित धर्मों एवं सम्प्रदायों के आदर्शों को आत्मसात कर पारस्परिक प्रेम, सद्भावना, दया, क्षमाशीलता, सब्र, संतोष, सेवा, परोपकार, सत्य, आत्मसंयम, इन्द्रिय-निग्रह, अहिंसा, समता, भ्रातृ-भावना आदि-आदि गुणों को आत्मसात कर जन-जन के हृदय में यथार्थ अनुभवों को प्रवेश करवा दिया।

इन गुणों में से प्रेम का सर्वाधिक महत्व है। इतिहास साक्षी है कि प्रेम के बिना कोई भक्त, संत अथवा दार्शनिक प्राणी-मात्र का मन नहीं जीत सकता। ईश्वर-प्राप्ति हेतु प्रेम-साधना की महत्ती आवश्यकता है और इस संदर्भ में गुरबाणी में अनेक प्रमाण हैं। जहां भक्त कबीर जी ने ''ढाई अक्षर प्रेम के पढ़ै सो पंडित होइ॥'' की कहावत को चरितार्थ किया, वहीं प्रेम के मार्ग को अत्यधिक कठिन भी माना गया है। श्री गुरु नानक देव जी ने तो इस मार्ग पर चलने हेतु शीश हथेली पर रख कर आने की हिदायत दी है :

इतु मारगि पैरु धरीजै।।
सिरु दीजै काणि न कीजै।। *(पन्ना १४१२)*

इसी भाव की अभिव्यक्ति भक्त शेख फरीद जी की बाणी में स्पष्ट दृष्टिगत होती है। भक्त शेख फरीद जी तो प्रेम का महत्व जगजाहिर करते हुए समझाते हैं कि मेरा यौवन चला जाए, उसकी मुझे तनिक भी परवाह नहीं, लेकिन मेरी

प्रभु-प्रियतम से प्रीति कम न हो !

जोबन जांदे ना डरां जे सह प्रीति न जाइ ।।
फरीदा किती जोबन प्रीति
बिनु सुकि गए कुमलाइ ।।

(पन्ना १३७९)

भक्त शेख फरीद जी के चिन्तनानुसार जब प्रभु-प्रियतम के साथ सच्चा प्यार हो तो साधक के मार्ग में कोई भी विकट से विकट परिस्थिति भी बाधक नहीं बन सकती। अत्यधिक तूफान, ओलावृष्टि के कारण मन में उठी शंका और फिर उसका निवारण, प्रभु से अटूट प्रेम के कारण कोई परिस्थिति आड़े नहीं आ सकती :

फरीदा गलीए चिकड़ु दूरि घरु
नालि पिआरे नेहु ।।
चला त भिजै कंबली रहां त तुटै नेहु ।।२४।।
भिजउ सिजउ कंबली अलह वरसउ मेहु ।।
जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाही नेहु ।।

(पन्ना १३७९)

नैतिकता ही मनुष्य को सदाचार की ओर प्रवृत्त करती है और विलक्षण ढंग से संयमी तथा अनुशासित जीवन जीने की कला सिखाती है। भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है कि नि:स्वार्थ भाव से समस्त प्राणियों को अपना समझना, सब में ईश्वरीय ज्योति के दर्शन करना। इसी समदृष्टि के फलस्वरूप समाज में समता का भाव पैदा होता है, जो इस धरती को सुखद धरा बना देता है। सूफी संत बाबा शेख फरीद जी इस धरती के प्रत्येक व्यक्ति को अनमोल मोती मानते हुए किसी से भी कटु व्यवहार न करने का प्यारा संदेश देते हुए फरमान करते हैं :

इकु फिका न गालाइ सभना मै सचा धणी ।।
हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ अमोलवे ।।

(पन्ना १३८४)

यही नहीं, विनम्रता एवं क्षमा को अनमोल आभूषण मानते हुए भक्त शेख फरीद जी अत्याचार करने वाले को भी क्षमा करने का पावन संदेश देते हुए समझाते हैं :

फरीदा जो तै मारनि मुकीआं तिन्हा न मारे घुंमि ।।
आपनड़ै घरि जाईऐ पैर तिन्हा दे चुंमि ।।

(पन्ना १३७८)

संत रूप में भक्त शेख फरीद जी द्वारा बुरा करने वालों का भी भला करने की प्रेरणा देकर कितना सुंदर पैगाम समूची मानवता हेतु है, जो निज-शांति के साथ-साथ विश्व-शांति के लिए भी सेतु का काम करने में सक्षम है :

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ।।
देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ।।

(पन्ना १३८१)

धर्म-ग्रंथों में भी यही संदेश है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मों के अनुसार फल मिलता है तो हमें स्वयं अपने गिरेबान में झाँकना चाहिए तथा अवगुणों को दूर करना चाहिए। दूसरों के गुनाह देखने का किसी को क्या अधिकार है? इस संदर्भ में भी भक्त शेख फरीद जी ने बड़ा सुंदर समझाया है :

फरीदा जे तू अकलि लतीफु
काले लिखु न लेख ।।

आपनड़े गिरीवान महि सिरु नीवां करि देखु।।

(पन्ना १३७८)

वास्तव में यदि भक्त शेख फरीद जी के एक सलोक पर भी मन-वचन-कर्म से अमल कर लिया जाए तो दुनिया के तमाम झगड़े मिट जाएं, विश्व-शांति स्थापित हो जाए।

ईश्वर के प्रति जिज्ञासु प्रवृत्ति : जिज्ञासु प्रवृत्ति आध्यात्मिक मार्ग की पहली सीढ़ी है। भक्त शेख फरीद जी बचपन से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति के थे। पांच वर्ष के बालक भक्त शेख फरीद जी को जब माँ ने नमाज पढ़ने को कहा था तो जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण ही आपने माँ से प्रश्न किया, ''माँ! नमाज़ अदा करने वालों को अल्लाह क्या देता है?'' माँ ने तुरंत कहा, ''अल्लाह शक्कर देता है!'' बुद्धिमती माँ जानती थी कि बालक को मीठा बहुत पसंद है, अत: माँ हर रोज उस चटाई के नीचे कोई मीठा पदार्थ रख देतीं, जिस पर बैठ बालक भक्त शेख फरीद जी नमाज अदा किया करते थे। एक दिन किसी कारणवश माँ मीठा रखना भूल गई, लेकिल उस दिन माँ के आश्चर्य की सीमा न रही, जब बालक भक्त शेख फरीद जी ने माँ से कहा, ''माँ! आज जिस मिठास को मैंने अनुभव किया, वह दुनिया के किसी भी पदार्थ में नहीं है।'' इस संदर्भ में आपने बाणी उच्चारण की :

फरीदा सकर खंडु निवात
गुड़ु माखिउों मांझा दुधु।।
सभे वसतू मिठीआं रब न पुजनि तुधु।।

(पन्ना १३७९)

ईश्वर की शरण में आकर भक्त शेख फरीद जी ने केवल बंदगी की खैर मांगी, क्योंकि वे जानते थे कि ईश्वर-सुमिरन के बिना जीवन मनोरथ सिद्ध नहीं हो सकता। खुदा के चरणों में यही विनती है भक्त शेख फरीद जी की :

तेरी पनह खुदाइ तू बखसंदगी।।
सेख फरीदै खैरु दीजै बंदगी।। (पन्ना ४८८)

जिज्ञासु मन का प्रश्न उठाते हुए भक्त शेख फरीद जी का कथन है कि वह कौन-सा अक्षर है, कौन-सा गुण है, वह कौन-सा सर्वोत्तम मंत्र है और वह कौन-सा वेश है, जिससे मेरा प्रियतम प्रभु मेरे वश में आ जाए? फिर वे रहस्यमयी ढंग से जवाब देते हैं- झुक जाना अक्षर है, सहन करना गुण है, मीठा बोलना सर्वश्रेष्ठ मंत्र है। अगर ये तीन वेश कोई (जीव-स्त्री) धारण कर ले तो प्रियतम प्रभु उसके वश में आ जाएगा। जिज्ञासु-मन का प्रश्न था :

कवणु सु अखरु कवणु गुणु
कवणु सु मणीआ मंतु।।
कवणु सु वेसो हउ करी जितु वसि आवै कंतु।।

और फिर रहस्यमयी प्रश्न का उत्तर था :

निवणु सु अखरु खवणु गुणु
जिहबा मणीआ मंतु।।
ए त्रै भैणे वेस करि तां वसि आवी कंतु।।

(पन्ना १३८४)

इस प्रकार बाबा शेख फरीद जी की जिज्ञासु प्रवृत्ति ने ईश्वर-मिलाप के सहज मार्ग खोज निकाले और अपने निर्मल उद्‌गारों से, अनुभूति-जन्य अनुभवों से समूची मानवता को

धर्म-कर्म एवं प्रेम की वास्तविक परिभाषा से अवगत करवाया। भक्त शेख फरीद जी के जीवन में विशेष आकर्षण तथा मधुरता थी। वैसे भी विनम्रता और मधुरता विशेष गुण हैं जो अन्य समस्त इन्सानी गुणों का उद्‌गम तथा अन्य सारी अच्छाइयों का निष्कर्ष है। इसी बाणी की मिठास ने लाखों लोगों को आपके चरणों का भंवरा बना दिया।

भक्त शेख फरीद जी ने अपने सरल, सहज एवं मृदु स्वभाव से दरवेशी की खुशबू चहुँ ओर बिखेरी। सर्वसाधारण से निकटता एवं प्यार का सम्बंध स्थापित किया तथा आपकी शहद से मीठी बाणी के फलस्वरूप आपका नाम 'शकरगंज' पड़ा। भक्त शेख फरीद जी सच्चे अर्थों में पारसमणि थे। साधु-संत, योगी, ज्ञानी, भक्त, साधक ही नहीं, अपितु साधारणजन और यहां तक कि पाषाण हृदय व्यक्ति भी उनकी अमृतमयी बाणी श्रवण कर तथा उनके दिव्य दर्शन कर पारस रूप हो गए। गागर में सागर भरने वाली उनकी अमृतमयी बाणी युगो-युग अटल श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सुशोभित है। उन्हीं का पावन व्यक्तित्व उन्हीं की बाणी में स्पष्ट है :

आपि लीए लड़ि लाइ दरि दरवेस से।।
तिन धंनु जणेदी माउ आए सफलु से।।

(पन्ना ४८८)

उसकी महिमा अनंत, अगम और अपार है

एक अकाल पुरख वाहिगुरु, सर्वशक्तिमान है।
सर्व सुखों का है वो दाता, परम निधान है।
दुखों का हरण-कर्त्ता, सब सुखों का प्रदाता है।
समूची मानवता का वह, भाग्य विधाता है।
उसकी महिमा अनंत, अगम और अपार है।
बिना भक्ति के कोई उसका, न पा सका पार है।
सतिगुरु की रहमत से जपते, जो उसका नाम हैं।
बस, उन्हीं को मिलता वह, कृपा निधान है।
जिन पर कृपा उसकी हो, वे कभी गुमान नहीं करते।
ध्यान हर पल प्रभु के, चरण-कमलों में धरते।
श्वास-ग्रास वे बस, शुक्राना हैं उसका करते।
किसी भी प्राप्ति का भूल कर, अभिमान नहीं करते।
सुख-दुख बेशक सबके, जीवन में आते हैं रहते।
ईश्वर के बंदे राज़ी, रज़ा में उसकी रहते।
किसी भी परिस्थिति में वे, धैर्य नहीं खोते हैं।
शुक्र कहते जागते हैं और शुक्र कहते ही सोते हैं।
परम परमात्मा पर सदैव रहता, उनका विश्वास है।
जिस एक के भरोसे होती, पूरी सबकी आस है।
उसकी दातें हैं बेअंत, वह रहमतों का भण्डार है।
डूबते हुए को भी वह, अविलंभ कर देता पार है।
हर पल शुक्राना करो, भय-अदब में रहो प्रभु के!
जीवन भी बदल जाएगा बस, विश्वास रखो इक रब पे!

सिक्ख इतिहास के जांबाज योद्धा भाई महिताब सिंघ एवं भाई सुक्खा सिंघ

*-डॉ. कशमीर सिंघ नूर**

गुरु साहिबान की अपार कृपा, प्रेरणा और आगवानी से सिक्ख धर्म दिन दुगनी, रात चौगुनी फलता-फूलता एवं फैलता रहा है। सिक्खों के हृदय में गुरु साहिबान, गुरु-घर तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रति असीम आस्था व श्रद्धा रही है, सम्मान व समर्पण की भावना रही है। सिक्ख इतिहास में ऐसे कई जांबाज, शूरवीर, निडर, बहादुर योद्धा हुए हैं, जिन्होंने पवित्र गुरुधामों का अपमान करने वालों को, गुरु-मर्यादा को भंग करने वालों को, मजलूमों व असहायों पर जुल्म करने वालों को अच्छा सबक सिखाया है, नाकों चने चबवाएं हैं, अपनी जान की कुर्बानी देकर गुरु-मर्यादा को बनाए रखा है, श्री गुरु ग्रंथ साहिब और गुरुद्वारा साहिबान के सम्मान की रक्षा की है, सिक्ख धर्म का परचम लहराया है।

दिवंगत ज्ञानी भजन सिंघ अपनी पुस्तक 'साडे शहीद' में वर्णन करते हुए लिखते हैं- ''सिक्ख इतिहास की रौंगटे खड़े करने वाली तथा अति प्रभावशाली घटनाओं में से एक घटना भाई महिताब सिंघ एवं भाई सुक्खा सिंघ द्वारा अगस्त १७४० ई. में श्री अमृतसर साहिब पहुंचकर श्री दरबार साहिब पर काबिज़ दुष्ट फ़ौजदार मस्सा रंघड़ चौधरी का सिर काटना है।''

इतिहास साक्षी है कि यदि चौधरी मस्सा रंघड़ जैसे पापियों व दुष्टों का पाप व ज़ुल्म चर्म सीमा पर पहुंचा तो ऐसे अत्याचारियों एवं दुराचारियों को यमलोक पहुंचाने वाले शूरवीर पैदा होते रहे हैं।

भाई महिताब सिंघ श्री अमृतसर साहिब ज़िले के गांव मीरांकोट के रहने वाले थे। इनका जन्म इसी गांव में सन् १७१० ई. में हुआ था। कहा जाता है कि भाई महिताब सिंघ और शहीद भाई तारू सिंघ जी आपस में बुआ व मामा के सुपुत्र थे अर्थात् फुफेरे व ममेरे भाई थे।

उस समय की सरकार द्वारा भी सिक्खों को कई बहानों से परेशान, तंग तथा प्रताड़ित किया जाता था। भाई महिताब सिंघ यह सब देख कर चिंतित व दु:खी रहते थे। इस समय के दौरान सिक्खों को अपने अस्तित्व का महत्व सरकार को बताने व दर्शाने की जरूरत थी। सरकार की धक्केशाही व ज्यादती शुरू होने से पहले ही वे राजपूताना (राजस्थान) क्षेत्र में चले गए थे। वहाँ जाकर जयपुर रियासत में काम करना शुरू कर दिया था। पंजाब से जब कोई उनसे भेंट करने आता तो भाई महिताब सिंघ उसकी खूब सेवा करते और उसे अपने पास बैठाकर पंजाब के

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; फोन : ९८७२२-५४९९०*

हालात की जानकारी प्राप्त करते, परिस्थितियों का अवलोकन करते। वहां पर पहुंचने वाले प्रत्येक सिंघ की उन्होंने अपने सामर्थ्य के अनुसार सेवा की।

सन् १७४० के गर्मी के मौसम की बात है कि पंजाब से एक आदमी सरदार बलाका सिंघ जाकर उनके पास ठहरा। उसने बताया कि एक मुसलमान फौजदार मस्सा रंघड़ श्री अमृतसर साहिब का प्रमुख (इंचार्ज) नियुक्त किया गया है। वो सिक्खों पर अत्याचार कर रहा है और पूरे क्षेत्र में उसने सिक्खों को ढूंढ-ढूंढ कर खत्म करना शुरू कर दिया है। श्री दरबार साहिब में जिस स्थान पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश और शबद-कीर्तन होता है, वह पापी स्वयं उस स्थान को अपवित्र कर रहा है तथा हुक्का पीकर उस पवित्र व पूजनीय स्थान को अशुद्ध कर रहा है। वहां पर शराब के दौर चलते हैं और वेश्याओं का नाच-गाना होता है।

सरदार बलाका सिंघ से यह पूरी सनसनीखेज एवं दु:खदायक खबर सुनकर भाई महिताब सिंघ का खून खौल उठा। मन बेहद बेचैन हो उठा। उनकी व्यथित एवं व्याकुल आत्मा ने उसी समय एक निर्णय ले लिया कि श्री अमृतसर साहिब में स्वयं पहुंचकर उस पापी व दुष्ट को उसके दुस्साहस व अपराध का दंड अवश्य दिया जाए। इस काम हेतु एक अन्य शूरवीर सिंघ भाई सुक्खा सिंघ भी उनके साथ तैयार हो गए। दोनों घोड़ों पर सवार होकर श्री अमृतसर साहिब की ओर चल पड़े।

तीक्ष्ण गर्मी की परवाह न करते हुए, लगातार यात्रा तय करते हुए वे दोनों गुरु के सिंघ श्री अमृतसर साहिब पहुंच गए। रास्ते में कई जगह उन्हें रोकने के प्रयत्न भी किए गए। उन दिनों सरकार ने सिक्खों के सिरों पर इनाम घोषित कर रखे थे, इसलिए क्रूर सरकार के पिट्ठुओं तथा धन के लोभियों ने उन्हें पकड़ने की भरपूर कोशिश की, परंतु वे जांबाज सिंघ शत्रुओं से लड़ते हुए और अपना बचाव करते हुए श्री अमृतसर साहिब पहुंच गए।

सिक्ख विद्वान भगत लछमण सिंघ के कथनानुसार – इन दोनों ने पहले पवित्र सरोवर में स्नान किया और फिर एक योजना के तहत बाजार में जाकर कुछ थैले खरीदे। थैलों में नीचे कंकड़ तथा उनके ऊपर रुपयों के कुछ सिक्के भर कर स्वयं वेश बदल लिया। वे यूं दिखाई देने लगे, जैसे सरकारी लगान (कर) उगाहने वाले कर्मचारी हों। श्री दरबार साहिब पहुंचकर उन्होंने पहरेदारों से भीतर जाने की अनुमति मांगी, जो कि तुरंत मिल गई। वे दोनों भीतर चले गए। उन्हें बैठने की पेशकश की गई, किन्तु उन्होंने बैठने से मना कर दिया। थैले दिखाते हुए उन्होंने कहा कि हमने पहले साथ लाई हुई धनराशि भेंट करनी है। भाई महिताब सिंघ ने थैला आगे बढ़ाया। मस्सा रंघड़ झुककर थैला पकड़ने लगा कि उसी पल भाई मुक्खा सिंघ ने फुर्ती से काम लिया और म्यान में से अपनी कृपाण निकाली तथा झुके हुए मस्सा रंघड़ का सिर काटकर धड़ से अलग कर दिया। लहू का फव्वारा फूट पड़ा। अरे! यह क्या

हो गया? लरज़ता हुआ प्रश्न फिजा में लटक गया। पाँव में घुंगरू बांधकर नाच रही नर्तकी मारे दहशत के बेहोश होकर गिर पड़ी। बाकी आदमियों को जैसे सांप सूंघ गया हो। वे किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर रह गए।

भाई सुक्खा सिंघ द्वार पर डटे खड़े थे, ताकि भीतर का कोई आदमी बाहर और बाहर का कोई आदमी भीतर जा-आ न सके। अपनी योजना को अंजाम देकर दोनों निर्भीक योद्धा मस्सा रंघड़ का सर भाले पर टांग कर बाहर आ गए। शोर मचने तथा शाही फ़ौज पहुंचने से पहले-पहले वे शूरवीर सिंघ घोड़ों पर सवार होकर और जयकारे गुंजाते हुए दूर तक चले गए।

इस घटना का उस समय की राजनीतिक व सामाजिक परिस्थितियों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। सरकार तो एलान कर चुकी थी कि उसने सारी सिक्ख कौम खत्म कर दी है। एक बार फिर सबको पता चल गया कि गुरु के सिक्ख अभी जिंदा हैं और वे अपने दुश्मनों को नाकों चने चबवा सकते हैं, उन्हें नेस्तनाबूद कर सकते हैं। सरकारी कर्मचारियों के हौसले पस्त होने लगे। सिक्खों व उनके हमदर्द मददगारों में उत्साह भरी ऊर्जा का संचार होने लगा। भाई महिताब सिंघ तथा भाई सुक्खा सिंघ ने दरसा दिया कि सिक्खों के अस्तित्व को मिटाया नहीं जा सकता।

उपरोक्त घटना के समय भाई महिताब सिंघ तथा भाई सुक्खा सिंघ बेशक बचकर निकल गए थे लेकिन कुछ समय बाद जब भाई महिताब सिंघ एक दिन गांव में अपने बेटे से मिलने के लिए आए, तब कसबा जंडियाला के एक जासूस ने सरकार को सूचना देकर उन्हें गिरफ्तार करवा दिया। उन्हें लाहौर ले जाया गया और वहां पर घोर यातनाएं देकर भाई जी को शहीद कर दिया गया।

ऐतिहासिक विवरण के अनुसार उनके साथी भाई सुक्खा सिंघ गांव माड़ी कंबोअ (कंबोज जाति का गांव) के निवासी थे। वे बचपन से ही धार्मिक विचारों के थे और उन्होंने होश संभालते ही खंडे-बाटे का अमृत-पान कर लिया। वे जानते थे कि सिंघ सजे हुए गुरसिक्ख को सरकार बर्दाश्त नहीं करती तथा उसे कत्ल कर देती है। फिर भी भाई सुक्खा सिंघ अपने निर्णय पर अडिग रहे।

भाई महिताब सिंघ की भांति भाई सुक्खा सिंघ को भी एक गुप्त सूचना के आधार पर गिरफ्तार कर लिया गया। ज़करिया खान ने इन्हें भी घोर यातनाएं देकर शहीद कर दिया।

नादिर शाह, ज़करिया खान, अब्दाली, मीर मन्नू, लखपत राय, औरंगजेब, वजीर खान, जहांगीर जैसे कई अत्याचारियों, अन्यायकारियों, अधर्मियों, दुष्टों को साहस, धैर्य, शूरवीरता, दृढ़ता, बहादुरी के साथ मुकाबला करते सिक्ख कौम ने सच्चे धर्म को, मानवीय गुणों को, गुरुधामों की आन-बान-शान को, श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सम्मान को अनेक कुर्बानियां देकर बनाए रखा है, जो कि भविष्य में भी बना रहेगा। सिक्खों के संघर्ष का नगाड़ा हमेशा बजता रहेगा!

21 सिक्ख सैनिकों के अद्भुत शौर्य की गाथा : सारागढ़ी की जंग

*-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

'सवा लाख से एक लड़ाने वाले' और 'चिड़ियों से बाज तुड़ाने वाले' दशमेश पिता के अमृत की दात और प्रेरणा ऐसी अनोखी थी कि उसने अनगिनत साधारण मनुष्यों को असाधारण योद्धा और बलिदानी बना डाला। गुरु साहिब के आशीर्वाद ने अनेक साधारण मनुष्यों में ऐसी अद्वितीय शक्ति भर दी कि वे निरन्तर मानवता-विरोधियों से लोहा लेते रहे। दशमेश पिता की शिक्षा-दीक्षा ऐसी थी, जिसने सिक्ख योद्धाओं में अपने से कई गुना शत्रु के सामने भी डटे रहने का जज़्बा पैदा कर दिया।

सिक्ख इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण भरे पड़े हैं, जब मुट्ठी भर सिक्खों ने विशाल लश्कर से भिड़ने में कोई देरी नहीं की और अपने से कई गुना दुश्मन की फौज़ को नाकों चने चबवा दिए।

दिसंबर, १७०४ ई. के चमकौर के युद्ध में मात्र ४० सिक्खों ने दस लाख के लश्कर का मुकाबला किया था। यही नहीं, खिदराणे की ढाब पर भी हज़ारों की फौज़ से लड़ने वाले 'मुकते' भी गिनती में मात्र ४० ही थे। इसी प्रकार मई, १७२६ ई. में भाई तारा सिंघ वां के नेतृत्व में मात्र सौ-सवा सौ सिक्खों ने गांव वां में पहले जाफर बेग के ५०० के दल को मात दी थी और फिर ज़करिया ख़ान के सिपहसालार मोमिन खान के २२०० घुड़सवारों के दांत खट्टे कर दिए थे। इसी तरह, सन् १७३९ में सराय नूरदीन में खालसा चुंगी लगाने वाले बाबा बोता सिंघ और बाबा गरजा सिंघ ने केवल लकड़ी लाठियों के साथ लड़ते हुए फौज़दार जलालुद्दीन के सौ घुड़सवारों के साथ जबरदस्त जंग की और उनमें से ८० घुड़सवारों को मौत के घाट उतार दिया। इसी प्रकार दिसंबर, १७६४ ई. में शहीद भाई गुरबखश सिंघ मात्र तीस साथियों के साथ श्री हरिमंदर साहिब की रक्षा के लिए अहमद शाह अब्दाली की ३६००० की फौज़ से भिड़ गए थे।

आधुनिक काल में भी एक ऐसा युद्ध हुआ है, जहां दशमेश पिता के मुट्ठी भर सिक्खों ने हज़ारों की फौज़ को मलियामेट कर दिया। यह युद्ध 'सारागढ़ी का युद्ध' कहलाता है और यह घटनाक्रम नाम से भी प्रसिद्ध है।

सारागढ़ी का युद्ध

सारागढ़ी का युद्ध ब्रिटिश शासन और अफ़गानों के बीच १२ सितंबर, १८९७ ई. को लड़ा गया था। लगभग २५००० ओरकजई और अफरीदी कबीले के अफ़गानों ने सारागढ़ी की चौकी पर हमला कर दिया। हवलदार ईशर सिंघ के नेतृत्व में किले में २१ सैनिक थे, जो सभी सिक्ख थे। इन सिक्ख सैनिकों ने आत्मसमर्पण करने से इन्कार कर दिया और शत्रु का डट कर मुकाबला किया। सभी सिक्ख शहीद हो गए, परंतु उन्होंने छः सौ से भी ऊपर अफ़गानों को या तो मौत के घाट उतार दिया या घायल कर

*१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना— फोन : ६२३९६-०१६४१

दिया। सारा दिन युद्ध करके भी अफ़गान लड़ाके शाम तक सारागढ़ी पर कब्ज़ा नहीं कर सके।

युद्ध, में शामिल सभी २१ सैनिकों को मरणोपरांत इंडियन ऑर्डर ऑफ मेरिट' से सम्मानित किया गया, जो उस समय किसी भारतीय सैनिक को मिलने वाला सर्वोच्च वीरता पुरस्कार था। भारतीय सेना की सिक्ख रेजिमेंट प्रति वर्ष १२ सितंबर को 'सारागढ़ी दिवस' के रूप में इस युद्ध की स्मृति मनाती है।

युद्ध की पृष्ठभूमि

सारागढ़ी वर्तमान पाकिस्तान में समाना रेंज पर स्थित कोहाट के सीमावर्ती जिले का एक छोटा-सा गाँव है। अगस्त, १८९७ ई. में, लेफ्टिनेंट कर्नल जॉन हॉटन के नेतृत्व में ३६वीं सिक्ख बटालियन की पांच कंपनियां ब्रिटिश भारत की उत्तरी-पश्चिमी सीमा (आधुनिक खैबर पख्तूनख्वा) के समाना हिल्स, कुराग, संगर, सहटॉप धार और सारागढ़ी में तैनात थीं। अंग्रेजों ने यहां महाराजा रणजीत सिंघ द्वारा निर्मित किलों में चौकियां स्थापित कर रखी थीं। दो प्रमुख किले- फोर्ट लॉकहार्ट (हिंदूकुश पहाड़ों की समाना रेंज) और फोर्ट गुलिस्तान (सुलेमान रेंज) थे। ये दोनों एक-दूसरे से कुछ मील की दूरी पर स्थित थे। किलों के एक-दूसरे को दिखाई न देने के कारण, सारागढ़ी को बीच में 'संचार-पोस्ट' के रूप में बनाया गया था। चट्टानी पहाड़ी पर स्थित सारागढ़ी पोस्ट में लूपहोल वाली प्राचीर और एक सिग्नलिंग टॉवर वाला एक छोटा ब्लॉक हाऊस लगाया गया था।

१८९७ ई. में अफगानों द्वारा वहां एक विद्रोह शुरू हुआ। २७ अगस्त और ११ सितंबर के बीच, किलों पर कब्जा करने के पश्तूनों के कई जोरदार प्रयासों को ३६वीं सिक्ख बटालियन ने विफल कर दिया। ३ और ९ सितंबर को अफगानों ने फोर्ट गुलिस्तान पर हमला कर दिया, परंतु सभी हमलों को विफल कर दिया गया।

१२ सितंबर, १८९७ ई. : युद्ध का वर्णन

सारागढ़ी की लड़ाई का विवरण काफी प्रमाणिक माना जाता है, क्योंकि सिपाही गुरमुख सिंघ घटित होने वाली घटनाओं के बारे में लगातार हेलियोग्राफ़ के माध्यम से संकेत देता रहा था।

उसके वर्णन के अनुसार सुबह नौ बजे, लगभग १०,००० अफगान सारागढ़ी में सिग्नलिंग पोस्ट पर आ पहुंचते हैं। सिपाही गुरमुख सिंघ ने फोर्ट लॉकहार्ट में बैठे कर्नल हॉटन को संकेत दिया कि उन पर हमला हो गया है। हॉटन ने जवाब दिया कि वे सारागढ़ी को तत्काल मदद नहीं भेज सकते, परंतु हॉटन ने यह संकेत दे दिया कि सारागढ़ी पर १०,००० से १४,००० के बीच पश्तून हमला कर रहे हैं।

इधर सारागढ़ी में २१ सिक्ख सैनिकों ने दुश्मन को किले तक पहुंचने से रोकने के लिए आख़िरी दम तक लड़ने का फैसला किया।

सिपाही भगवान सिंघ शहीद होने वाले पहले सैनिक थे और नायक लाल सिंघ गंभीर रूप से घायल हो गए थे।

कोई पेश न चलती देख, पश्तूनों ने सैनिकों को आत्मसमर्पण करने के लिए लुभावने वादे भी किए। गेट तोड़ने के लिए दो हमले भी किए गए, लेकिन असफल रहे। बाद में दीवार तोड़ दी गई। इसके बाद आमने-सामने की भीषण लड़ाई हुई।

हवलदार ईशर सिंघ ने अपने साथियों को भीतरी परत में वापस जाने का आदेश दिया, जबकि

वे उनकी वापसी को कवर करने के लिए रुके रहे। भीतरी परत के टूटने के बाद अनेक अफ़गानों को मौत के घाट उतारते हुए सभी सिक्ख सैनिक शहीद हो गए।

सिपाही गुरमुख सिंघ, जिन्होंने सिग्नलमैन के रूप में हॉटन को लड़ाई के बारे में सूचित किया था, अंतिम जीवित सिपाही थे। उनका आख़िरी संदेश अपनी राइफल उठाने की अनुमति मांगने के लिए था। अनुमति मिलने पर उन्होंने हेलियोग्राफ़ को पैक किया और अपने सिग्नलिंग शेड का दरवाज़ा पकड़ लिया। सिपाही गुरमुख सिंघ ने ४० अफ़गानों को मार डाला था और दुश्मन को उन्हें मारने के लिए चौकी में आग लगाने के लिए मजबूर होना पड़ा था। शहीद होते समय गुरमुख सिंघ ने बार-बार जयकारा लगाया था -- '' बोले सो निहाल, सत श्री अकाल!''

सारागढ़ी के शहीद

सारागढ़ी में शहीद हुए २१ सिक्ख सैनिकों की सूची यह है :-

१. हवलदार ईशर सिंघ (रेजिमेंटल नंबर १६५)
२. नायक लाल सिंघ (३३२)
३. लांस नायक चंदा सिंघ (५४६)
४. सिपाही सुद्ध सिंघ (१३२१)
५. सिपाही राम सिंघ (२८७)
६. सिपाही उत्तम सिंघ (४९२)
७. सिपाही साहिब सिंघ (१८२)
८. सिपाही हीरा सिंघ (३५९)
९. सिपाही दया सिंघ (६८७)
१०. सिपाही जीवन सिंघ (७६०)
११. सिपाही भोला सिंघ (७९१)
१२. सिपाही नारायण सिंघ (८३४)
१३. सिपाही गुरमुख सिंघ (८१४)
१४. सिपाही जीवा सिंघ (८७१)
१५. सिपाही गुरमुख सिंघ (१७३३)
१६. सिपाही राम सिंघ (१६३)
१७. सिपाही भगवान सिंघ (१२५७)
१८. सिपाही भगवान सिंघ (१२६५)
१९. सिपाही बूटा सिंघ (१५५६)
२०. सिपाही जीवा सिंघ (१६५१)
२१. सिपाही नंद सिंघ (१२२१)

युद्ध का परिणाम

सारागढ़ी को नष्ट करने के पश्चात्, अफ़गानों ने अपना ध्यान फोर्ट गुलिस्तान की ओर लगाया, लेकिन तब तक उन्हें बहुत देर हो चुकी थी और किले पर कब्ज़ा करने से पहले ही १३-१४ सितंबर की रात को एक बड़ी सेना वहाँ पहुँच गई थी। पश्तूनों ने बाद में स्वीकार किया कि २१ सिक्ख सैनिकों के खिलाफ लड़ाई के दौरान उनके लगभग १८० अफ़गान मारे गए थे और कई अन्य घायल हो गए थे, लेकिन वहां पहुंचे राहत दल के अनुसार सारागढ़ी चौकी के आसपास लगभग ६०० अफगानियों के शव पड़े थे।

ऑर्डर ऑफ मेरिट

सारागढ़ी की लड़ाई में शहीद हुए २१ सिक्ख गैर-कमिशन अधिकारी थे और उन्हें मरणोपरांत 'इंडियन ऑर्डर ऑफ मेरिट' से सम्मानित किया गया, जो उस समय किसी भारतीय सैनिक को मिलने वाला सर्वोच्च वीरता पुरस्कार था। यह वीरता पुरस्कार तब 'विक्टोरिया क्रॉस' कहलाता था। यह पुरस्कार आज दिये जाने वाले 'परमवीर चक्र' के बराबर है।

स्मृति-चिह्न

२१ सिक्ख सैनिकों की स्मृति में अंग्रेजों ने तीन

यादगारों का निर्माण करवाया,जिनमें एक वज़ीराबाद में, जहाँ पर यह जंग हुई थी, दूसरी, गुरुद्वारा श्री सारागढ़ी साहिब, एक श्री अमृतसर साहिब में, श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य प्रवेश द्वार के कुछ दूरी पर स्थित और तीसरी फिरोजपुर छावनी में।

पंजाब में सन् २००० से स्कूलों के पाठ्यक्रम में साका सारागढ़ी को शामिल कर लिया गया है।

यूनाइटेड किंगडम में सारागढ़ी दिवस

यूनाइटेड किंगडम में साका सारागढ़ी का ज़िक्र बार-बार बड़े सम्मान के साथ किया जाता रहा है।

मई, २००२ ई. प्रिंस चार्ल्स (अब किंग चार्ल्स) ने एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया, जिसमें सारागढ़ी पर एक खंड दिखाया गया था। प्रदर्शनी को १,००,००० से भी अधिक लोगों ने देखा और सराहा।

२०१३ ई. में ओल्ड कॉलेज, रॉयल मिलिट्री अकादमी सैंडहर्स्ट में 'सारागढ़ी : द फॉरगॉटन बैटल' पुस्तक लॉन्च की गई, जिसके लेखक फिल्म निर्माता जय सिंघ सोहल थे। तब से इसे ब्रिटिश सशस्त्र बलों द्वारा प्रत्येक वर्ष 'युद्ध सम्मान दिवस' के तौर पर मनाया जाता है।

यही नहीं, यूके के विभिन्न वरिष्ठ मंत्रियों और सशस्त्र बलों के जनरलों द्वारा अक्सर सारागढ़ी की गाथा का उल्लेख करते हुए शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाती रही है।

नवंबर, २०२० ई. में वॉल्वर हैम्प्टन सिटी काउंसिल द्वारा वेडन्सफील्ड में गुरुद्वारा साहिब के बाहर सारागढ़ी युद्ध की स्मृति में हवलदार ईशर सिंघ की १० फुट ऊंची कांस्य प्रतिमा का निर्माण कराया गया। इस प्रतिमा का अनावरण १२ सितंबर, २०२१ ई. को किया गया।

रुपहले पर्दे पर सारागढ़ी की जंग

सितंबर, २०१७ ई. में यूके के पत्रकार और फिल्म निर्माता जय सिंघ सोहल की एक डॉक्यूमेंट्री 'सारागढ़ी : द ट्रू स्टोरी' युद्ध की १२०वीं वर्षगांठ पर स्टैफोर्डशायर के नेशनल मेमोरियल अबेरिटम में प्रदर्शित की गई।

एक टीवी सीरीज '२१ सरफरोश–सारागढ़ी १८९७' १२ फरवरी, २०१८ ई. से ११ मई, २०१८ ई. तक 'डिस्कवरी जीत' पर प्रसारित हुई, जिसमें मोहित रैना, मुकुल देव और बलराज सिंघ खहिरा ने अभिनय किया।

२०१९ ई. में भारत में 'केसरी' फिल्म रिलीज हुई, जिसमें साका सारागढ़ी का बहुत प्रमाणिक और सुंदर चित्रण हुआ है। इस फिल्म में हवलदार ईशर सिंघ की भूमिका अक्षय कुमार ने निभाई है।

इसके अतिरिक्त एक काव्य 'खालसा बहादुर' भी सारागढ़ी में शहीद हुए सिक्ख सैनिकों की स्मृति में रचा गया है।

इस प्रकार सारागढ़ी का युद्ध विश्व के सैनिक इतिहास की एक अद्भुत और बेमिसाल घटना है। इस युद्ध में दशमेश पिता के लाडलों ने दशमेश के कथन और आदेश ''देह सिवा बर मोहि इहै सुभ करमन ते कबहूं न टरों।। न डरों अरि सो जब जाइ लरों निसचै करि अपनी जीत करों।।'' को अक्षर–अक्षर सत्य कर दिखाया। अपने कर्त्तव्य के प्रति समर्पण से इन योद्धाओं ने सिद्ध कर दिया कि वे ''जब आव की अउध निदान बनै अत ही रन मै तब जूझ मरों' के महावाक्य के अनुसार आत्मबलिदान को सदा तत्पर रहते हैं।

अगस्त २०२३ का शेष भाग...

सेलुलर जेल अंडमान : पंजाब के स्वतंत्रता संग्रामी-२

*-डॉ. परमवीर सिंह**

स. किरपाल सिंह : पंजाब के लुधियाना ज़िले की तहसील रायकोट के गाँव बोपाराय के निवासी स. नरायण सिंघ के ये पुत्र थे। ग़दर लहर में भाग लेने के कारण इन्हें गिरफ़्तार किया गया। १९१५ ई. में प्रथम लाहौर साजिश केस में इनकी जायदाद ज़ब्त करने और उम्र-कैद की सज़ा सुनाई गई, जो कि बाद में घटा कर १० वर्ष कर दी गई। सज़ा काटने के लिए इनको काला पानी भेज दिया गया।

श्री किरपा (कृपा) राम : ये मौजूदा पाकिस्तान के गुजरात ज़िले के गाँव मांगट के निवासी श्री ब्रज लाल के पुत्र थे। १९१६ ई. में प्रथम मैंडले (बर्मा) साजिश केस में गिरफ़्तार कर इन पर मुकद्दमा चलाया गया और २७ जुलाई, १९१६ ई. को फांसी की सज़ा सुना दी गई। यह सज़ा उम्र-कैद में तबदील कर इन्हें अंडमान जेल भेज दिया गया।

स. खड़क सिंघ : पंजाब के लुधियाना ज़िले के गाँव बोपाराय के निवासी स. गंडा सिंघ के ये पुत्र थे। ग़दर लहर में भाग लेने के कारण इन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया। १९१५ ई. के लाहौर साजिश केस में इनकी जायदाद ज़ब्त कर उम्र-कैद की सज़ा सुनाई गई थी। सज़ा काटने के लिए इन्हें अंडमान भेज दिया गया।

स. खुशहाल सिंघ : ये श्री अमृतसर साहिब ज़िले के गाँव पद्धरी के निवासी स. सुचेत सिंघ के पुत्र थे। ग़दर लहर में भाग लेने के कारण इन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया। १९१५ ई. में लाहौर साजिश केस में इनको मौत की सज़ा सुनाई गई, जो कि वायसराय ने उम्र-कैद में तबदील कर दी। सज़ा काटने के लिए इनको अंडेमान भेज दिया गया। जेल में इन्होंने बाबा जवाला सिंघ के नेतृत्व में जेलर द्वारा किए जा रहे ज़ुल्मों का विरोध किया, जिसके परिणामस्वरूप इन्हें छः महीने किश्ती में रहने की सज़ा सुनाई गई।

श्री खुशी राम मेहता: पंजाब के होशियारपुर के निवासी श्री लब्भू राम के ये पुत्र थे। मद्रास बैंक बम आदि केसों में इन्हें १९३३ ई. में गिरफ़्तार कर उम्र-कैद की सज़ा सुनाई गई। १९३४ ई. में इन्हें अंडमान भेज दिया गया। इनका नाम जेल कैदियों की सूची में पत्थर पर लिखा हुआ है।

स. गुरदास सिंघ : पंजाब के ये गदरी नेता अंग्रेज़ सरकार के ख़िलाफ़ बग़ावत करने के दोष के अधीन गिरफ़्तार किए गए। प्रथम लाहौर साजिश केस में सज़ा सुना कर इन्हें अंडमान भेज दिया गया।

स. गुरदित्त सिंघ : पंजाब के तरनतारन ज़िले के गाँव सुरसिंघ के निवासी स. गुरमुख सिंघ और हुकम कौर के ये पुत्र थे। ग़ दर पार्टी की गतिविधियों में इन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया।

*सिक्ख विश्वकोष विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला- १४७००२, फोन : ८९७२०-७४३२२

सरकार के ख़िलाफ़ संघर्ष छेड़ने के दोष में गिरफ़्तार कर 'डिफेंस ऑफ इंडिया' एक्ट के अधीन प्रथम लाहौर साजिश केस में इन पर मुकद्दमा चलाया गया। १३ सितंबर, १९१५ ई. को उम्र-कैद की सज़ा सुना कर इन्हें अंडमान भेज दिया गया। १८ वर्ष बाद इनकी रिहाई संभव हुई। १९५० ई. में इनका निधन हो गया।

स. गुरमुख सिंघ : पंजाब के लुधियाना ज़िले के गाँव ललतों खुर्द के निवासी स. हुशनाक सिंघ और बीबी प्रेम कौर के घर १८८८ ई. में इनका जन्म हुआ। ख़ुशहाल जीवन की अभिलाषा में १९१४ ई. में इन्होंने विदेश जाने का फ़ैसला कर लिया। हाँगकाँग पहुँचने पर इन्हें यह सुन कर निराशा हुई कि कनाडा सरकार द्वारा लगाई गई नयी पाबंदियों के अधीन वहाँ जाना असंभव है, मगर बाबा गुरदित्त सिंघ द्वारा कनाडा जाने के लिए चलाए गए कामागाटामारू जहाज़ में ये सवार हो गए। जहाज़ को वापस भारत लौटा दिया गया। ये कलकत्ता के बजबज घाट पर जब उतरे तो वहां अंग्रेज सरकार के साथ इनका गंभीर रूप से सामना हो गया। चाहे स. गुरमुख सिंघ यहाँ से सुरक्षित बच निकलने में सफल हो गए, मगर शीघ्र इन्हें गिरफ़्तार कर कलकत्ता की अलीपुर जेल में भेज दिया गया। तीन महीने बाद पंजाब भेज कर इनकी गाँव में सीमाबंदी कर दी गई।

पंजाब पहुँचने पर भले ही इन पर नजर रखी जा रही थी, परन्तु चोरी-छिपे इन्होंने अपनी राजसी गतिविधियां जारी रखीं। एक साथी की गद्दारी के कारण इन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया। १३ सितंबर, १९१५ ई. को प्रथम लाहौर साजिश केस में इन्हें उम्र-कैद की सज़ा सुनाई गई। १९१६ ई. में इन्हें अंडमान भेज दिया गया, जहाँ से १९२१ ई. में इन्हें मद्रास प्रेज़ीडेंसी, मौजूदा तामिलनाडु की स्लेम जेल में भेज दिया गया था। मद्रास से मनाली में तबदीली के दौरान चलती रेलगाड़ी में से छलांग लगा कर ये बच निकले। १९३४ ई. में गिरफ़्तार कर इन्हें शेष सज़ा काटने के लिए दोबारा अंडमान भेज दिया गया। १९३७ ई. में जेल में हुई भूख हड़ताल में इन्होंने भी भाग लिया था। १९४५ ई. में इन्हें पंजाब की मुलतान जेल में तबदील कर दिया गया, जहाँ से अगस्त १९४७ ई. में देश आज़ाद होने के बाद से रिहा हुए। ८४ वर्ष की आयु में इनका निधन हो गया।

स. गुरमुख सिंघ (द्वितीय) : पंजाब के लुधियाना ज़िले के गाँव नथाणा के निवासी स. कंवल सिंघ के ये पुत्र थे। ग़दर लहर में भाग लेने के कारण इन्हें गिरफ़्तार किया गया। प्रथम लाहौर साजिश केस में सज़ा सुना कर इन्हें अंडमान भेज दिया गया।

स. चतर सिंघ सांगला : पंजाब के रोपड़ ज़िले के गाँव मनौली के निवासी स. सावन सिंघ और श्रीमती पंजाब कौर के ये पुत्र थे। १८८७ ई. (बिक्रम सिंघ घुंमण के अनुसार १८५७ ई.) में इनका जन्म हुआ। सांगला हिल स्कूल में ये अध्यापक के तौर पर सेवा निभा रहे थे कि इनका झुकाव ग़दर लहर की तरफ हो गया। १९०९ ई. में मास्टर सुंदर सिंघ लायलपुरी ने, 'क्या ख़ालसा कॉलेज सिक्खों का है?' शीर्षक अधीन एक ट्रेक्ट (पुस्तिका) लिखा जो कि ख़ालसा कॉलेज पर

अंग्रेज़ सरकार का प्रबंध होने का विरोध करता था। यह भावना बहुत-से सिक्खों में फैल रही थी कि अंग्रेज़ों ने पंजाब पर कब्ज़े की तरह ख़ालसा कॉलेज पर कब्ज़ा कर लिया है। ग़दर लहर के प्रभावाधीन स. चतर सिंघ के मन में भी अंग्रेज़ों के प्रति नफ़रत पैदा हो गई थी। ये ख़ालसा कॉलेज श्री अमृतसर साहिब के अंग्रेज़ प्रिंसिपल को मारने के लिए श्री अमृतसर साहिब आए, लेकिन भ्रमवश उन्होंने एक अन्य अंग्रेज़ प्रोफ़ेसर डंकलिफ़ पर १६ दिसंबर, १९१४ ई. को कटार से कातिलाना हमला कर दिया। धारा ३०७ के अधीन इन पर मुकद्दमा चलाया गया और उम्र-कैद की सज़ा सुना कर अंडमान भेज दिया। यहाँ पर इनका अन्य देश-भक्तों की तरह जेलर और जेल सुप्रिंटेंडेंट के साथ प्रतिदिन तकरार होती थी। ये उन देश-भक्तों में शामिल थे जिन्होंने छुट्टी वाले दिन काम करने से मना कर दिया था। इन्हें भी अन्य कैदियों की भांति छ : महीने चक्की बंद, छ: महीने बेड़ियों और कम ख़ुराक की सज़ा सुनाई गई थी। इनकी छ: महीने वाली सज़ा अभी पूरी नहीं हुई थी कि इन्होंने किसी बात से दुखी करने पर सुप्रिंटेंडेंट को ऐसा ज़ोरदार थप्पड़ मारा कि वह कुर्सी से नीचे गिर गया। इतने में वहाँ खड़े सिपाही स. चतर सिंघ पर टूट पड़े। स. चतर सिंघ को एक पिंजरे में बंद कर दिया। जब लगभग साढ़े तीन वर्ष तक उन्हें बाहर न निकाला गया तो उनके लिए 'हा' का नारा मारते हुए बाबा सोहण सिंघ भकना ने भूख-हड़ताल शुरू कर दी। लगभग दो महीने की भूख-हड़ताल के आगे झुकते हुए मास्टर चतर सिंघ को पिंजरे में से बाहर निकाला गया। तब भाई सोहण सिंघ भकना ने ख़ुश होकर रोटी खाई थी।

स. चतर सिंघ (द्वितीय) : ये पंजाब के श्री अमृतसर साहिब के निवासी थे। अंग्रेज़ों को भारत से निकालने के लिए ये ग़दर पार्टी के सदस्य बने थे। २९ सितंबर, १९१४ ई. को भारत पहुँचने पर इन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया और १७ दिसंबर, १९१४ ई. को उम्र-कैद की सज़ा सुना कर इन्हें अंडमान भेज दिया।

स. चंनण सिंघ ढंड कसेल : पंजाब के श्री अमृतसर साहिब के गाँव ढंड कसेल के निवासी स. नत्था सिंघ के ये पुत्र थे। २३-रिसाला फ़ौजी टुकड़ी से सम्बन्धित ये जवान गदरियों के साथ सहानुभूति रखते थे। इनकी टुकड़ी लाहौर में तैनात थी और जब इन्हें उतर-प्रदेश भेजा गया तो इनके एक साथी के बक्से में रखा हुआ बम फट गया, जिससे इनका भेद खुल गया। १९ अगस्त, १९१५ ई. को गिरफ़्तारी के बाद दगशयी की फ़ौजी अदालत में जब इन पर मुकद्दमा चलाया गया तो पहले मौत की सज़ा सुनाई गई और फिर यह सज़ा उम्र-कैद में बदल कर इन्हें अंडमान भेज दिया गया।

श्री चेत राम वैरोवाल : ये वर्तमान पाकिस्तान के ज़िला सियालकोट के गाँव वैरोवाल के निवासी बिशन दास के पुत्र थे। ये लाला हरदयाल की 'भारत माता पार्टी' के सदस्य बने। ये स्याम देश में काम करते थे, जहाँ से ये बर्मा चले गये। २७ जुलाई, १९१६ ई. को प्रथम मैंडले साजिश केस में इन्हें उम्र-कैद की सज़ा सुनाई गई जो कि बाद में घटा कर ७ वर्ष कर दी गई। सज़ा काटने के

लिए इन्हें अंडमान भेज दिया गया। १९२२ ई. में इन्हें रिहा कर दिया गया।

स. चूहड़ सिंघ : पंजाब के लुधियाना ज़िले के गाँव लील के निवासी स. बूटा सिंघ के ये पुत्र थे। १९१५ ई.में प्रथम लाहौर साजिश केस में सज़ा सुना कर इन्हें अंडमान भेज दिया। १९२२ ई. में जेल कमिशन की रिपोर्ट के बाद बाबा जवाला सिंघ के साथ पहले इनको मद्रास की कोयम्बटूर जेल और फिर भंडारा जेल में भेज दिया गया।

श्री जगत राम : पंजाब के होशियारपुर ज़िले के गाँव हरिआणा के निवासी श्री दित्तू मल्ल के ये पुत्र थे। ग़दर पार्टी लहर की गतिविधियों में भाग लेने के कारण इनको गिरफ़्तार कर लिया गया। १९१५ ई. के प्रथम लाहौर साजिश केस में पहले मौत की सज़ा सुनाई गई और फिर यह सज़ा उम्र-कैद में तबदील कर इनको अंडमान भेज दिया।

भाई जवाला सिंघ : पंजाब के श्री अमृतसर साहिब ज़िले के गाँव ठट्टियां में १८६६ ई. में इनका जन्म स. घनईआ सिंघ के घर हुआ। जवान हुए तो रोजगार करने के लिए चीन, मनीला, मैक्सिको होते हुए १९०८ ई. में ये नौजवान कैलेफोर्निया जा पहुँचे। यहाँ पर कृषि-कार्य में ऐसा नाम कमाया हुआ कि इनको आलू का बादशाह कहा जाने लगा। यहीं इनकी मुलाकात बाबा वसाख़ा सिंघ के साथ हुई, जिनके प्रभावाधीन इन्होंने सरबत्त के भले के लिए 'गुरू नानक एजूकेशनल सोसायटी' गठित कर फंड एकत्रित करना शुरू कर दिया। अपनी दसवंध की कमाई के साथ-साथ एकत्रित किया जाने वाला फंड अमेरिका आकर पढ़ने वाले जरूरतमंद नौजवानों की शिक्षा पर ख़र्च किया जाता था। विदेश में निवास कर रहे भारतीयों को एक प्लेटफार्म पर लाने के लिए हिंदी एसोसिएशन गठित की तो भाई जवाला सिंघ को इसका उपाध्यक्ष बनाया गया। इस एसोसिएशन ने भारत में चल रहे संघर्ष की गतिविधियों का विश्लेषण करना आरंभ कर दिया जिसने विदेशों में बसते भारतीयों के मन में स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने हेतु प्रेरणा पैदा की। देश को आज़ाद कराने के लिए भाई जवाला सिंघ अमेरिका से चल कर मनीला, हाँगकाँग, सिंगापुर, पीनांग होते हुए भारत पहुँचे। कलकत्ता बंदरगाह से गिरफ़्तार कर इनको पंजाब भेज दिया, जहाँ प्रथम लाहौर साजिश केस में इन पर मुकद्दमा चलाया गया। उम्र-कैद की सज़ा सुना कर इनको अंडमान भेज दिया गया। जेल में जेलर बेरी की ज्यादतियों के विरुद्ध ये आवाज़ उठाते थे, जिस कारण सज़ा और सख़्त हो जाती थी। जेल अधिकारियों की ज्यादतियों की पड़ताल करने आए कमिशन की रिपोर्ट के आधार पर पंजाब के कैदियों को भारत की जेलों में तबदील कर दिया गया। भाई जवाला सिंघ को मद्रास लाया गया। यहाँ से भाई जवाला सिंघ को भंडारा जेल में भेज दिया गया और अठारह वर्ष की जेल की सज़ा काटने के पश्चात रिहा कर दिया गया। रिहाई के पश्चात इन्होंने 'देश-भक्त परिवार सहायता समिति' गठित की। किसानों के आंदोलन के साथ जुड़-कर' किरती पत्रिका के माध्यम से लोक-चेतना पैदा करने के साथ-साथ लोगों की आवाज़ सरकार तक पहुंचाना आरंभ कर दिया। १९३८ ई. में लाहौर के

निकट एक सड़क दुर्घटना में ये परलोक गमन कर गए।

स. जवंद सिंघ : स. जवंद सिंघ पंजाब के तरनतारन ज़िले के अधीन गाँव सुरसिंघ के निवासी स. उत्तम सिंघ के पुत्र थे। ग़दर लहर में हिस्सा लेने के कारण इनको गिरफ़्तार कर लिया गया और प्रथम लाहौर साजिश केस में इनको उम्र-कैद की सज़ा सुनाई गई जो कि बाद में घटा कर १० वर्ष कर दी गई। सज़ा काटने के लिए इनको काला पानी भेज दिया गया।

स. जीवन सिंघ फ़ैलोके : मौजूदा पाकिस्तान के ज़िला गुजरांवाला के गाँव फ़ैलोके निवासी स. ईशर सिंघ और बीबी चन्द कौर के घर १८८८ ई. में इनका जन्म हुआ। ये कामागाटामारू जहाज़ के मुसाफ़िर थे। १९१६ ई. में प्रथम मैंडले साजिश केस में इन पर मुकद्दमा चलाया गया। उम्र-कैद की सज़ा सुना कर इनको उसी वर्ष अंडमान भेज दिया गया। १९२२ ई. में रिहा होकर घर आये तो लगभग १४ वर्ष पुलिस की नज़रबंदी में रहे।

स. ठाकर सिंघ : पंजाब के श्री अमृतसर साहिब ज़िले के गाँव ठट्टियां के निवासी स. सूबा सिंघ के ये पुत्र थे। भारतीय फ़ौज के २२वें रिसाले में ये घुड़सवार के रूप में नौकरी करते थे। नौकरी छोड़ कर हाँगकाँग चले गये और ग़दर पार्टी लहर के प्रभावाधीन भारत वापस लौट आये। १९१६ ई. के प्रथम लाहौर सप्लीमेंटरी केस में उम्र-कैद की सज़ा सुना कर इनको अंडमान भेज दिया गया।

स. तेजा सिंघ : पंजाब के तरनतारन कसबा के गाँव भिक्खीविंड के निवासी स. दयाल सिंघ के ये पुत्र थे। ग़दर पार्टी लहर के प्रभावाधीन पंजाब आए, तो गिरफ़्तार कर लिए गए। प्रथम लाहौर साजिश केस में मुकद्दमा चला कर इनको उम्र-कैद की सज़ा सुनाई जो कि बाद में १० वर्ष की कर दी गई। सज़ा काटने के लिए इनको अंडमान भेज दिया गया।

नादिर अली शाह : ये लाहौर ज़िले के अधीन कसूर के निवासी कायम अली शाह के पुत्र थे। कसूर सप्लीमेंटरी केस में इन पर मुकद्दमा चलाया गया। १९१९ ई. में मार्शल लॉ कमिशन ने इनकी जायदाद ज़ब्त करने और मौत की सज़ा का हुक्म सुनाया। सरकार ने मौत की सज़ा उम्र-कैद में तबदील कर इनको अंडमान भेज दिया।

स. नंद सिंघ : पंजाब के लुधियाना ज़िले के गाँव कैला के निवासी स. राम सिंघ के ये पुत्र थे। प्रथम लाहौर साजिश केस में इनकी जायदाद ज़ब्त करने के साथ-साथ मौत की सज़ा हुई, जो कि वायसराय ने उम्र-कैद में बदल दी। सज़ा काटने के लिए इनको अंडमान भेज दिया गया।

स. नंद सिंघ (द्वितीय) : मौजूदा पाकिस्तान के ज़िला लायलपुर के गाँव चक्क नंबर ५५ रुख बुर्ज के निवासी स. पंजाब सिंघ के ये पुत्र थे। भारतीय फ़ौज के १९वें रसाले में भरती हुए, परन्तु अंग्रेज़ सरकार के ख़िलाफ़ चल रही आज़ादी की लहर के साथ हमदर्दी रखते थे। आज़ादी की लहर के साथ हमदर्दी रखने के कारण पहले कोर्ट मार्शल हुआ और फिर उम्र-कैद की सज़ा सुना कर इनको अंडमान भेज दिया गया। Who´s Who Punjab Freedom Fighters´ शीर्षक अधीन पुस्तक में इनका विवरण मिलता है।

स. नंद सिंघ (तृतीय) : पंजाब के श्री अमृतसर

साहिब ज़िले के गाँव राय का बुर्ज के निवासी स. पंजाब सिंघ के ये पुत्र थे। २३- रिसाला फ़ौजी टुकड़ी से सम्बन्धित ये लाहौर की मियांपुर छावनी में तैनात थे। ये उन फौजियों में शामिल थे जो गदरियों के साथ सहानुभूति रखते थे और इनकी तरफ से अंग्रेज़ सरकार के विरुद्ध की जाने वाली कार्यवाही में हिस्सा लेना चाहते थे। गदरियों की सहायता के लिए इन्होंने कुछ हथियार भी इकट्ठा कर लिये थे। १९ फरवरी, १९१५ ई. को इनकी रेजिमेंट के कुछ जवानों को उतर प्रदेश में पोस्ट किया गया, तो इनके एक साथी के संदूक में रखा हुआ बम फट गया, जिससे इनका भेद खुल गया। दगशयी में १८ जवानों का कोर्ट मार्शल किया गया, जिसमें से १२ को मौत की सज़ा और ६ को उम्र-कैद की सज़ा सुनाई गई। इन्हें उम्र-कैद की सज़ा सुना कर अंडमान भेज दिया गया। सेलुलर जेल में इनका देहांत हो गया।

स. नत्था सिंघ : श्री अमृतसर साहिब ज़िले के गाँव ढोटियां के निवासी स. सदा सिंघ और माता केसर कौर के घर ४ मार्च, १८९१ ई. को इनका जन्म हुआ। २३-रिसाला फ़ौजी टुकड़ी से सम्बन्धित ये गदरियों के समर्थक थे। इनकी टुकड़ी लाहौर में तैनात थी और जब इनको उतर प्रदेश में तैनात किया गया तो इनके एक साथी के बक्से में रखा हुआ बम फट गया जिससे इनका भेद खुल गया। देशद्रोह का केस चला कर दगशयी में इनका कोर्ट मार्शल किया गया। पहले मौत की सज़ा सुनाई गई। फिर यह सज़ा उम्र-कैद में बदल कर १९१५ ई. में इसको अंडमान भेज दिया गया। २२ अप्रैल, १९१९ ई. को जेल में ही इनका निधन हो गया।

स. निधान सिंघ : ये फ़िरोज़पुर जिले के गाँव चुग्घा के निवासी स. सुंदर सिंघ के पुत्र थे। रोज़गार की तलाश में ये अमेरिका चले गए। स्टाकटन में ख़ालसा दीवान सोसायटी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। ग़दर लहर में शामिल होकर भारत आने के लिए हाँगकाँग पहुँचे, तो वहाँ लहर के प्रबंध को सुचारू रूप से चलाने के लिए बनाई गई केंद्रीय समिति के सदस्य चुन लिये गये। एस. एस. मिशीमा मारु जहाज़ पर सवार होकर भारत पहुँचे तो इसको गिरफ़्तार कर लिया गया। १९१५ ई. में प्रथम लाहौर साजिश केस में इन्हें मौत की सज़ा हुई, जो कि वायसराय ने उम्र-कैद में तबदील कर दी। जनवरी, १९१६ ई. में इनको अंडमान भेज दिया गया। इसी जेल में ही भाई निधान सिंघ को किताब पढ़ने के जुर्म में सज़ा हुई थी।

परमानंद, भाई : मौजूदा पाकिस्तान के चकवाल के निकट गाँव करिआली में ४ नवंबर, १८७६ ई. को इनका जन्म भाई तारा चंद मोहयल के घर हुआ। आठवीं कक्षा तक इन्होंने चकवाल में ही शिक्षा हासिल की। फिर लाहौर में दाख़िला ले लिया। पंजाब यूनिवर्सिटी लाहौर से १९०२ ई. में एम. ए. करने के पश्चात्त अध्यापन-कार्य आरंभ किया और तीन वर्ष बाद अफ्रीका चले गए। यहाँ से ये इंग्लैंड चले गए और १९०८ ई. में भारत वापस आ गए। १९१२ ई. में ये अमेरिका चले गए और वहाँ जाकर कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी में दाख़िला ले लिया। वहां पर इनकी मुलाकात ग़दर

पार्टी के सक्रिय नेता हरीदिआल के साथ हुई, जिसके प्रभावाधीन ये इस लहर की तरफ खिंचे चले गए। यहाँ इन्होंने एक किताब तारीख-ए-हिंद लिखी थी। यह किताब अंग्रेज़ों को बहुत पीड़ा देता थी। पंजाब आकर इन्होंने फार्मेसी की दुकान खोल ली, जहाँ पर विदेशों से आने वाले गदरी लोग अक्सर आया करते थे। सरकार को पहले से ही इन पर शक था जो कि और अधिक पक्का हो गया। १९१५ ई. में इनको गिरफ़्तार कर लिया गया। प्रथम लाहौर साजिश केस में इन्हें मौत की सज़ा सुनाई गई जो कि बाद में उम्र-कैद में तबदील कर दी गई। सज़ा काटने के लिए इन्हें अंडमान जेल भेज दिया गया। जेल में इसी नाम का एक और कैदी भाई परमानंद झांसी था, जिसका जेलर बैरी के साथ इस बात को लेकर झगड़ा हो गया कि उसने दिए गए काम को पूरा नहीं किया था। जेलर बैरी ने उसे बुला कर बहुत बुरा-भला कहा और साथ ही गालियां भी दी। इस पर भाई परमानंद झांसी को गुस्सा आ गया और उसने जेलर के लात मार कर उसे नीचे फेंक दिया। इस बात पर वहाँ मौजूद जमांदारों ने उसे बहुत पीटा। जेलर जेल सुप्रिंटेंडेंट को यह मामला बताया तो भाई परमानन्द झांसी को छः महीने कोठी बंद, छ महीने डंडा-बेड़ी और २० बेंत मारने की सज़ा हुई। बेंत मारने से उसका शरीर बुरी तरह से लहूलुहान हो गया। भाई परमानन्द झांसी की सज़ा के ख़िलाफ़ बाबा सोहण सिंघ भकना, स. प्रिथवी सिंघ, स. जवंद सिंघ आदि कैदियों ने भूख हड़ताल शुरू कर दी। पहले तो जेलर पर इसका कोई प्रभाव न पड़ा , परन्तु जब यह भूख हड़ताल लम्बी हो गई तो जेलर घबरा गया। उसने भाई परमानन्द लाहौर के माध्यम से कैदियों के साथ समझौते की पेशकश की, जो कि इस शर्त पर स्वीकार कर ली गई कि भाई परमानन्द झांसी के विरुद्ध सभी सज़ाएं वापस ले ली जाएँ।

भाई परमानन्द लाहौर को कैदियों की सेवा करने का काम मिला। बीमार लोगों का बुख़ार देखने और उन्हें दूध पिलाने की सेवा भी इन्हें मिली थी। जेल में इन्होंने 'मेरे अंतिम समय के विचार' शीर्षकाधीन भगवद् गीता की सरल हिंदी व्याख्या की, जो कि लाहौर में संपूर्ण हुई। The Indian Press Ltd. Allahabad से यह पुस्तक पहली बार प्रकाशित हुई। इसके प्राक्कथन में ये लिखते हैं, ''अंडमान जेल में सन् १९१५ से १९२० तक रहते हुए ये नोट याददाश्त के तौर पर रखे गए। यह विचार बार-बार मेरे मन में आता था। दो माह अनशन के कारण मेरा ख्याल था कि काला पानी में ही मेरा शरीर-त्याग होगा, इसलिए उसके बाद यदि ये नोट किसी योग्य मनुष्य के हाथ लग जायेंगे तो वह इन्हें मुद्रित कर प्रकाशित कर देगा। समय ने रंग बदला और स्वयं मुझे ही इनको प्रकट करने का अवसर मिल गया। मैंने इनके अंदर कोई परिवर्तन करना उचित नहीं समझा और ज्यों के त्यों पाठकों के सामने रख दिये हैं। एक प्रकार से ये विचार मेरे अंतिम समय के हैं। तब मैं समझ बैठा था कि अब मेरा दुनिया में कभी कोई सम्बन्ध न होगा।''

स. प्रिथवी सिंघ आज़ाद : ये पंजाब की पटियाला रियासत के अधीन गाँव लालडू के

निवासी श्री शादी राम के पुत्र थे। ये राजपूत परिवार से सम्बन्धित थे और इनकी पृष्ठभूमि राजस्थान के जैसलमेर के साथ जुड़ती है। १५ सितम्बर, १८९२ ई. को इनका जन्म हुआ। इनके पिता बर्मा जा बसे थे, जहाँ पर दुग्ध व्यवसाय के माध्यम से बहुत बढ़िया कारोबार चला लिया था। इनके बड़े भाई भी वहाँ पर रहते थे और कुछ समय के बाद ये भी बर्मा चले गए। पंजाब और बर्मा की स्कूली शिक्षा ने इन्हें पंजाबी, बर्मी, हिंदी और अंग्रेज़ी आदि भाषाएं सिखा दी थीं। बर्मा से ये पीनांग, हाँगकाँग होते हुए मनीला पहुँच गए। यहाँ से ये स्टाकटन चले गए, जहाँ इनकी मुलाकात बाबा जवाला सिंघ और बाबा विसाख़ा सिंघ के साथ हुई। आलू की खेती करने के साथ-साथ ये ग़दर लहर के साथ जुड़ कर देश की आज़ादी के लिए यत्नशील हो गए। अमेरिका से ये योकोहामा (जापान), मनीला, हाँगकाँग, सिंगापुर, पीनांग और रंगून होते हुए भारत पहुँचे। रास्ते में इनका कई स्थानों पर स्वागत हुआ। तोशामारू जहाज़ के माध्यम से बर्मा से भारत आ रहे थे कि इन्हें अंग्रेज़ सरकार के सिपाहियों ने घेर लिया और रेलगाड़ी के माध्यम से कलकत्ता से पंजाब भेज दिया। पंजाब आकर इन्होंने अपनी गतिविधियां तेज कर दीं और सरकार ने इन्हें गिरफ़्तार कर लिया। १४ नवंबर, १९१५ ई. को प्रथम लाहौर साजिश केस में इनको मौत की सज़ा सुनाई गई थी जो कि वायसराय की कौंसिल ने उम्र-कैद में तबदील कर दी। सज़ा काटने के लिए इनको अंडमान भेज दिया गया। पंजाब से कलकत्ता लाया गया और पाँच दिन यहाँ की अलीपुर जेल में रखने के बाद महाराजा जहाज़ के माध्यम से इनको अंडमान ले जाया गया। नवंबर, १९१५ ई. से जुलाई १९२१ ई. तक ये इसी जेल में रह कर यातनाएं सहन करते रहे। यहाँ पर इनकी मुलाकात बहुत-से पंजाबी कैदियों के साथ हुई। इन्होंने देखा कि यहाँ लाए गए लगभग ९० कैदियों में से ४५ से भी ज्यादा पंजाब से सम्बन्धित हैं। जेल प्रशासन की किसी न किसी ज्यादती के कारण पंजाब के कैदी अक्सर उनका विरोध करते थे और उन्हें सख्त सज़ा का सामना करना पड़ता था। पिंजरे में बंद करना, हथकड़ियाँ और बेड़ियां लगा कर लगातार ७-८ घंटे सीधे रखना, बेंतों की सज़ा, गाली- गलौच आदि आम बात थी। इसी कठोरता के कारण बाबा भान सिंघ का देहांत हो गया था। इस ज़ुल्म के ख़िलाफ़ बाबा सोहन सिंघ भकना ने भूख हड़ताल आरंभ कर दी। चाहे बाबा जी ने अन्य देश-भक्तों को ऐसा करने से मना कर दिया था, फिर भी कुछ दिन बाद प्रिथवी सिंघ आज़ाद ने भी बाबा जी के पद-चिन्हों पर चलते हुए भूख हड़ताल आरंभ कर दी और पानी तक पीना भी छोड़ दिया। १३ दिनों के बाद इनको अस्पताल लाकर पाईप के माध्यम से दूध पिलाया गया।

जेल-सख़्ती की खबरें जेल से बाहर निकल कर कलकत्ता होते हुए पंजाब पहुँची, तो सब तरफ़ हाहाकार मच गई और राजनैतिक कैदियों को भारत की जेलों में तबदील करने की ज़ोरदार माँग उठने लगी। सरकार ने लोक-आक्रोश के आगे झुकते हुए बहुत-से राजनैतिक कैदियों को भारत की दूसरी जेलों में तबदील करने का

फ़ैसला कर लिया। इनको पहले मद्रास लाया गया और फिर कलकत्ता भेजने का फ़ैसला कर लिया। कलकत्ता मेल के माध्यम से इनको स. केहर सिंघ और स. खुशहाल सिंघ के साथ कलकत्ता ले जाया जा रहा था कि ओंगोल रेलवे स्टेशन पर ये कैद में से छूट कर भागने में सफल हो गए। दोबारा गिरफ़्तार कर इनको राजमुन्दरी जेल भेज दिया गया। १६ महीने इसी जेल में रखने के बाद इनको किसी और जेल में भेजा जा रहा था कि ये फिर कैद में से फरार होने में सफल हो गए। यहाँ से भाग कर ये मुम्बई आ गए और थीओसाफ़ीकल सोसायटी द्वारा चलाए जा रहे सनातन हाई स्कूल में इन्होंने बच्चों को शारीरिक प्रशिक्षण देना आरंभ कर दिया। कुछ वर्ष यहाँ नौकरी करने के बाद ये बर्मा चले गए और यहाँ से विदेश जाने का मन बना लिया, परन्तु जब ये यत्न सफल न हुआ तो रूपोश होकर ये रूस चले गए। १६ वर्ष रूपोश रहने के बाद इन्होंने महात्मा गांधी के कहने पर आत्म-समर्पण कर दिया। मुम्बई में आत्म-समर्पण करने के बाद इनको पंजाब लाकर रावलपिंडी जेल में बंद कर दिया। २३ सितम्बर, १९३९ ई. को द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने के कारण इन्हें रिहा कर दिया गया। बाहर आकर इन्होंने अपनी गतिविधियां पुनः जारी रखीं और माहत्मा गांधी द्वारा चलाए गए भारत छोड़ों आंदोलन में पूर्ण सक्रियता के साथ भाग लेना आरंभ कर दिया। भावनगर से गिरफ़्तार कर पहले इन्हें राजकोट (सौराष्ट्र) जेल भेजा और फिर पूना की यरवदा जेल में तबदील कर दिया। यहाँ से पैरोल पर रिहा होकर २७ नवंबर, १९४३ ई. को विवाह करवा लिया। ३ अक्तूबर, १९४४ ई. को पुत्र अजीत सिंघ तथा ९ मई १९४९ ई. को पुत्री प्रज्ञा पैदा हुई। देश की आज़ादी के बाद ये पंजाब वापस आ गए और १९४९ ई. में भीम सेन सच्चर के नेतृत्व में बनी सरकार में मंत्री बने। सेवाओं के बदले इन्हें १९७७ ई. में 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया गया। ५ मार्च, १९८९ ई. को इनका देहांत हो गया।

स. पिआरा सिंघ : ये पंजाब के होशियारपुर ज़िले के गाँव लंगेरी के निवासी स. लक्खा सिंघ के पुत्र थे। ये कामागाटामारू जहाज़ के माध्यम से भारत आये थे। गाँव आकर इन्होंने ग़दर लहर का प्रचार करना आरंभ कर दिया जिस कारण इनको गिरफ़्तार कर लिया गया। प्रथम लाहौर साजिश केस में इनकी जायदाद ज़ब्त करने और उम्र-कैद की सज़ा सुनाई गई थी। सज़ा काटने के लिए जनवरी १९१६ में इनको काला पानी भेज दिया गया।

स. पूरन सिंघ : स. जगजीत सिंघ बताते हैं कि ये लुधियाना जनपद के गाँव ईसवाल के निवासी स. हुशियार सिंघ के पुत्र थे। एक पुस्तक के अनुसार इन्हें तरनतारन जनपद के गाँव भैल ढाईवाला के निवासी स. हुकम सिंघ के पुत्र बताया गया है। ये भारतीय फ़ौज में नौकरी करते थे और १९४० ई. में इन्होंने देश से बाहर जाकर नौकरी करने से इन्कार कर दिया था, जिसके परिणामस्वरूप लाहौर साजिश केस के अधीन इनकी जायदाद ज़ब्त करने और उम्र-कैद की सज़ा सुनाई गई थी। सज़ा काटने के लिए इनको अंडमान भेज दिया गया।

स. बलवंत सिंघ : पंजाब के श्री अमृतसर साहिब ज़िले के गाँव सठियाला के निवासी स. हमीर सिंघ के ये पुत्र थे। रोज़गार की तलाश में ये सिंगापुर चले गये और वहाँ जाकर चौकीदार की नौकरी कर ली। सिंगापुर से वापस पंजाब आकर इन्होंने ग़दर लहर में भाग लेना शुरू कर दिया। फरवरी, १९१५ ई. में इन्हें ग़दर लहर के हेडक्वाटर से गिरफ़्तार कर लिया गया। १३ सितम्बर, १९१५ ई. को लाहौर साजिश केस में जायदाद ज़ब्त करने के साथ-साथ इनको मौत की सज़ा सुनाई गई जो कि गवर्नर जनरल की कौंसिल ने उम्र-कैद में तबदील कर दी। सज़ा भुगतने के लिए इनको अंडमान भेज दिया गया। १९३२ ई. में रिहाई के बाद वापस गाँव लौटे तो इन्हें दो वर्ष के लिए गाँव में नजरबंद कर दिया गया।

स. बिशन सिंघ : ये श्री अमृतसर साहिब ज़िले के गाँव ददेहर के निवासी स. केसर सिंघ के पुत्र थे। ये शंघाई पुलिस में कार्य करते थे और ग़दर लहर के प्रभावाधीन पंजाब लौट आये थे। ग़दर लहर की गतिविधयों में भाग लेने के कारण १९१५ ई. में इनको प्रथम लाहौर साजिश केस में उम्र-कैद की सज़ा देकर अंडमान भेज दिया गया था।

स. बिशन सिंघ : ये श्री अमृतसर साहिब ज़िले के गाँव ददेहर के निवासी स. जवाला सिंघ के पुत्र थे। मनीला से कामागाटामारू जहाज़ से माध्यम से पंजाब लौट कर इन्होंने ग़दर लहर की गतिविधियों में सक्रियता से भाग लेना आरंभ कर दिया, जिस कारण इन पर १९१५ ई. में लाहौर साजिश केस के अधीन मुकद्दमा चलाया गया और उम्र-कैद की सज़ा देकर अंडमान भेज दिया। १९२० ई. में इन्हें रिहा कर दिया गया। पंजाब लौट कर इन्होंने अकाली मोर्चों में भाग लेना आरंभ कर दिया।

स. बिशन सिंघ (तृतीय) : पंजाब के तरनतारन जिले के गाँव ढोटियां के निवासी स. जीवन सिंघ के ये पुत्र थे। २३-रिसाला फ़ौजी टुकड़ी से सम्बन्धित ये जवान गदरियों में रुचि रखते थे। इनकी टुकड़ी लाहौर में तैनात थी और जब इनको उतर-प्रदेश में तैनात किया गया तो इनके एक साथी के बक्से में रखा हुआ बम फट गया जिससे इनका भेद खुल गया। दगशयी में इनका कोर्ट मार्शल हुआ पहले इनको मौत की सज़ा सुनाई गई, परन्तु बाद में यह सज़ा १० वर्ष कारावास में तबदील कर दी गई। सज़ा काटने के लिए इनको अंडमान भेज दिया गया।

स. बिशन सिंघ (चतुर्थ) : पंजाब के तरनतारन ज़िले के गाँव ढोटियां के निवासी स. राम सिंघ के ये पुत्र थे। भारतीय फ़ौज के २३वें रिसाले से सम्बन्धित ये ग़दर पार्टी लहर में रुचि रखते थे, जिसके निष्कर्ष के परिणामस्वरूप इनको कोर्ट मार्शल का सामना करना पड़ा। १९१५ ई. में इनको १० वर्ष की सज़ा सुनाकर अंडमान भेज दिया गया

क्रमशः . . .

महाकवि भाई संतोख सिंघ : एक परिचय

*-डॉ. गुरमुख सिंघ**

भाई संतोख सिंघ उन्नीसवीं सदी के सिक्ख इतिहास, धर्म, दर्शन एवं संस्कृति के परम ज्ञाता थे और काव्य जगत के सूर्य, जिन्हें बहुत-सी भाषाओं का ज्ञान था। आपके काव्य में वे सभी गुण प्रचंड रूप में विद्यमान हैं, जिनका ज़िक्र भारतीय काव्य-शास्त्र में है।

भाई संतोख सिंघ का जन्म नूर दी सरां, ज़िला तरनतारन संवत् १७८७ में भाई देवा सिंघ तथा माता रजादी के घर करीर वंश के मेहनतकश दर्ज़ी परिवार में हुआ। आपका बचपन गरीबी में बीता। समय पाकर आपका विवाह जगाधरी के एक परिवार की बीबी राम कौर के साथ हुआ। आपके पाँच पुत्र और तीन पुत्रियां थीं। आपने विद्या प्राप्त करने के लिए उस समय के प्रसिद्ध ज्ञानी संत सिंघ को उस्ताद धारण किया। ज्ञानी संत सिंघ श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर साहिब के मुख्य ग्रंथी थे। महाराजा रणजीत सिंघ उनके परम श्रद्धालु थे। उनके माध्यम से ही श्री दरबार साहिब पर सोना लगाया गया था। वे श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अद्वितीय कथाकार थे। आप लगभग १५ वर्ष उनकी हज़ूरी में रहे। बाद में बूड़िया चले गए और किसी सरदार के पास रहने लगे। किसी कारण यहाँ से मन उपराम हो गया और आप कई स्थानों पर रहे। आपने अपनी गरीबी और निर्धन दशा का ज़िक्र इस प्रकार किया है :

छुटयो है प्राक्रम औ बिसारयो है नेम धरम,
ऐ खोई हयाउ श्रम अति दुख पाईयति है।
घर के रुसाने सब आपने भए बिगाने,
नारी के ताने सुन सिर निआईयति है।
मित्र हूं छुपाने नैन सूधे हूं न बोले बैन,
मन मै न धरे जा के ढिग जाईयति है।
दुआर पै करज़दार ठाढे मुख देति गार,
बिना रोज़गार रोज़ गार खाईयति है।

आपकी विद्वता और काव्य-कला में निपुणता के बारे में जब कैथल नरेश उदै सिंघ को पता चला तो उन्होंने आपको अपने पास बुला लिया, जहाँ आप अपने अंतिम समय तक रहे। यहाँ महाराजा साहिब ने आपको हर प्रकार की सुख-सुविधाएं प्रदान करने का सराहनीय कार्य किया। आपको रहने के लिए एक बड़ी हवेली, नौकर-चाकर और खाने-पीने का सामान आदि पूरी खुलदिली के साथ दिया। आप काफ़ी सुखद हो गए और साहित्य की रचना करनी आरंभ कर दी।

भाई साहिब ने कई स्थानों पर कैथल तथा महाराजा उदै सिंघ का ज़िक्र किया है। वे विद्या-प्रेमी, विद्वानों के कद्रदान, बहादुर और युद्ध में कमाल दिखाने वाले थे। आपकी महिमा कवि जी ने इस प्रकार वर्णन की है :

भाग भूर भगतु भगति भरपूर भव,
भारो भय भंजन भगत भगवान को।
तां के सुभ बंस मै वडंस उदै सिंघ भूप,

**८, दशमेश नगर, पुलिस लाईन रोड, पटियाला— १४७००१*

ज़ाहर जहान मैं महान कीन आन को।
सिखी सुख ख़ान को सिखैया सीख सयान को,
सुनैया गुण गयान को धरया गुर धयान को।
पकरै क्रिपान को नसैया शत्रु जान को,
रखैया कुल खान को दिवैया जग दान को।

महाराजा उदै सिंघ के कोई संतान नहीं थी। अंग्रेज़ों ने कैथल पर कब्ज़ा करना चाहा तो महारानी महिताब कौर ने उनका मुकाबला किया। युद्ध में उसकी हार हुई। अंग्रेज़ों ने इस रियासत पर कब्ज़ा कर लिया। फौज को शहर लूटने की इजाज़त दे दी। उन्होंने ऐसी भयानक तबाही मचायी कि रहे रब का नाम! भाई साहिब की हवेली भी लूट का शिकार बनी। आपको कोई जानी नुकसान नहीं हुआ, परन्तु धन-संपदा ज़ालिम सब लूट कर ले गए। यह भी संभव है कि आपके कुछ ग्रंथ भी इस लूट में नष्ट हो गए हों। भाई साहिब ने इस लूट का वर्णन बहुत करुणामयी ढंग के साथ किया है।

आपने संवत् १९०० में कैथल में शरीर त्यागा। भाई जी भारतीय दर्शन-शास्त्रों के ज्ञाता थे। आपको काव्य के शास्त्रीय नियमों या सिद्धांतों का पूर्ण ज्ञान था। आप घुड़सवारी, वैद्यक, संगीत, राजनीति, शस्त्र-विद्या आदि को अच्छी तरह समझते थे। आपके काव्य-ग्रंथों में इनके बारे में सूक्ष्म टिप्पणियाँ हैं। आपको भारतीय इतिहास-मिथिहास का पूर्ण ज्ञान था। आपने रामायण, महाभारत, पुराण आदि में से कई हवाले दिए हैं। आपने वेदांत का गहरा अध्ययन किया हुआ था, जिसका प्रमाण है कि आपने जहाँ कहीं दार्शनिक विषय की बात को छुआ है, वहीं वेदांत का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। भक्ति-योग, ज्ञान-मार्ग का विस्तृत विवेचन आपने किया है। आप संस्कृत, हिंदी, ब्रज, अरबी-फ़ारसी, पहाड़ी, लहिंदी, पंजाबी के परमज्ञाता थे। जहाँ आपकी रचना में इतिहास, संस्कृति, धर्म-दर्शन की व्याख्या है, वहीं भारत की मौजूदा राजनैतिक और ऐतिहासिक दशा का भी वर्णन है। आप में महाकवि वाले सभी गुणों के दर्शन होते हैं। आपकी रचनाओं के बारे में संक्षिप्त विचार प्रस्तुत हैं :-

नाम कोश : यह भाई साहिब की पहली रचना है। यह संस्कृत के प्रसिद्ध ग्रंथ 'अमर कोश' कृत अमर सिंघ का सुंदर काव्य अनुवाद है, जो दोहरा, सवैया, कवित्त, चौपई आदि छंदों में है। इसकी रचना आपने बूड़िया में निवास के दौरान आरंभ की और संवत् १८७८ में श्री अमृतसर साहिब में पूर्ण की। आपने संस्कृत न जानने वालों को संस्कृत के शब्द-सागर के दर्शन करवाने हेतु यह अनुवाद किया। यह आपकी भाषा और शब्दावली को अमीर बनाने में भी सहायक हुआ। इसकी एकमात्र प्रति सेंट्रल पब्लिक लायब्रेरी पटियाला में उपलब्ध है।

गुरु नानक प्रकाश : यह श्री गुरु नानक साहिब की जीवन-गाथा है, जो आपकी मौलिक रचना है। इसे भाई साहिब ने १८२३ ई. में बूड़िया में सम्पूर्ण किया। इसे दो भागें में बाँटा गया है- उत्तरार्द्ध, जिसके ७३ अध्याय हैं और पूर्वार्द्ध, जिसके ५७ अध्याय हैं। इस ग्रंथ की छंद संख्या ९७००० है। सतिगुरु श्री गुरु नानक देव जी भाई साहिब के इष्ट थे, जिन्होंने भारत के लोगों को उपदेश देते हुए हर पक्ष से बेहतर जीवन बसर करने के लिए प्रेरित किया। ऐसे सर्वसाझे सतिगुरु के बारे में उनके

समकालीन और परवर्ती साहित्यकारों ने श्रद्धा सहित लिखा है। भाई संतोख सिंघ ऐसे श्रद्धालु साहित्यकारों में प्रमुख हैं, जिन्होंने 'गुरू नानक प्रकाश' प्रबंध- काव्य लिख कर श्री गुरु नानक देव जी की जीवन-गाथा, उपदेश और धर्म-साधना के बारे में जनसाधारण को सरल ढंग से बताने का सफल यत्न किया है। आपकी नज़र में श्री गुरु नानक देव जी प्रभु का अवतार थे, इस कारण इस रचना में इतिहास के साथ-साथ पुराण का रंग और ज्यादा पक्का हो गया है। वास्तव में आपने श्री गुरु नानक देव जी के उस स्वरूप को शब्दों में साकार करने का प्रयास किया है जो उनकी भावना के अनुरूप था। यही कारण है कि श्री गुरु नानक देव जी का बिंब दैवी महापुरुषों वाला है। आपने इस ग्रंथ में नैतिक शिक्षा के साथ-साथ नाम-सिमरन, प्रभु-भक्ति और धर्म के आदर्श रूप को प्रस्तुत करने का सफल यत्न किया है। आपका विचार है कि सतिगुरु श्री गुरु नानक देव जी कलियुग में सतियुग लेकर आए थे।

गरब गंजनी : जपु जी सटीक : आनन्दघन अहंकारी विद्वान था। उसने अपनी विद्वता दिखाने के लालच में गुरु साहिब की उत्कृष्ट बाणी का टीका करते हुए अशुद्ध और भ्रम उत्पन्न करने वाले अर्थ किए, जिसका उत्तर देने के लिए आपने कैथल नरेश उदै सिंघ के कहने पर इस ग्रंथ की रचना की। आपने इस टीके में यत्र-तत्र आनन्दघन के टीके का वर्णन करते हुए 'जपु जी' का शुद्ध और दार्शनिक रंगत वाला टीका करने का सफल यत्न किया है। यह मात्र टीका ही नहीं, 'जपु जी' का भाष्य है, क्योंकि आपने भारतीय चिंतनधारा के संदर्भ में बाणी का विश्लेषण किया है। आपने बाणी में आए लगभग ५० अलंकारों के बारे में विचार किया है। इस प्रकार पहली बार 'जपु जी' का साहित्यिक मूल्यांकन हुआ है। यह रचना 'जपु जी' की दार्शनिक व्याख्या और साहियक मूल्याकन करने वाली महत्वपूर्ण रचना है।

गुर प्रताप सूरज ग्रंथ : कैथल नरेश उदै सिंघ द्वारा विनती करने पर कवि संतोख सिंघ ने 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' की रचना की। आपने १८३६ ई. में यह ग्रंथ लिखना आरंभ किया, जो १८४३ ई. में पूरा हुआ। इस प्रकार यह कवि जी की सात-आठ वर्ष की निरंतर साधना का फल है। इस ग्रंथ के नामकरण का तात्पर्य है कि गुरु साहिबान के प्रताप और ज्ञान रूपी सूरज की किरणों ने हर प्रकार के अंधविश्वासों, अज्ञान, अन्याय आदि के अंधकार को नष्ट कर दिया है और सब तरफ़ धर्म का प्रकाश कर दिया है। भाई जी ने सूरज की गति के अनुसार इस ग्रंथ के कथानक को रूपों में विभाजित किया है- १२ रास (राशियां), ६ ऋतुएं और २ ऐनों में इस ग्रंथ के बीस अध्याय हैं; ११५१ अंश/ किरण और ५१८२९ छंद हैं।

भाई साहिब ने इस ग्रंथ में श्री गुरु अंगद देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक की जीवन-कथा लिखते हुए बाबा बंदा सिंघ बहादुर और मुगलों के ज़ुल्म की रौंगटे खड़े करने वाली अत्याचार की गाथा विस्तार सहित बयान की है। इस ग्रंथ की सृजना करते समय आपने पूर्ववर्ती ग्रंथों की सहायता ली है। आपने कई स्थान पर खुद जाकर या आदमी भेज कर, सूचना एकत्रित कर सत्य की तह तक जाने का प्रयास किया है। गुरु

साहिबान, उनके समकालीन और सिक्खों के जीवन आदि के बारे में आपने बहुत बारीकी के साथ बयान किया है। पाठक या श्रोता ऐसे महसूस करता है जैसे यह सब कुछ घटित होते समय वो घटना-स्थल पर मौजूद था। इस ग्रंथ में सिक्ख धर्म, इतिहास, नैतिक-जीवन-मूल्यों और संस्कृति के बारे में गंभीरता के साथ लिखते हुए भारतीय दर्शन, इतिहास या धार्मिक मान्यताओं के बारे में भी बहुत सुंदर टिप्पणियाँ की हैं। हिंदू धर्म के बारे में जानकारी बहुत मूल्यवान है।

भाई साहिब ने गुरु साहिबान को अवतार मान कर उन्हें देवताओं/ अवतारों के समान आलौकिक शक्तियों के स्वामी, करामाती और चमत्कारी परम पुरुष प्रदर्शित किया है। यही कारण है कि कई स्थानों पर ऐसे वृत्तांत और विचार प्रस्तुत किये गए हैं जो गुरमति दर्शन के साथ मेल नहीं खाते। इस प्रकार यह गुरु-कथा काफ़ी हद तक ऐतिहासिक नहीं रह जाती, पौराणिक बन जाती है। इस ग्रंथ में पौराणिक रंग काफ़ी पक्का नज़र आता है। कवि ने वास्तव में 'सिक्ख पुराणों' का सृजन कर दिया है। इसमें अवतारी भावना और चमत्कारी रंग-रूप प्रमुख है, जिस कारण इसकी कथा साधारण सिक्ख संगत को अति प्रिय लगती है। लगभग सभी ऐतिहासिक या बड़े गुरुद्वारों में इस ग्रंथ की कथा प्रतिदिन शाम को होती है और हज़ारों श्रद्धालु नितनेम के साथ सुनते हैं।

यह महान ग्रंथ केवल गुरु-इतिहास ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति का चित्रण करने वाला अहम स्रोत-ग्रंथ भी है, क्योंकि इस ग्रंथ में जहाँ भारतीय दर्शन, चिंतनधारा, भक्ति, नैतिकता आदि के बारे में महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ हैं, वहीं सिक्ख धर्म-दर्शन, साधना-पद्धति, रहित-मर्यादा, जीवन-जाच आदि की सुंदर व्याख्या भी की गई है। वास्तव में यह भारतीय संस्कृति, दर्शन और सिक्ख इतिहास-विचारधारा आदि की भी व्याख्या करने वाला विश्वकोश है।

आपने आत्म-पुराण का भी हिन्दी/ ब्रज भाषा में अनुवाद किया, परन्तु अब वह उपलब्ध नहीं है। एक सीहरफी पंजाबी में मिलती है, परन्तु वह आपकी रचना नहीं लगती, चाहे उसमें नाम आपका ही आया है।

भाई संतोख सिंघ उन्नीसवीं सदी के महान विद्वान एवं कवि थे, जिन्होंने गुरु साहिबान और उनके श्रद्धालु सिक्ख सेवकों का मुकम्मल इतिहास काव्य में रच कर उनका यश घर-घर पहुँचाने का सुंदर प्रयास किया है। उन्होंने जनसाधारण में भारतीय संस्कृति, दर्शन और जीवन-मूल्यों के लिए चेतना पैदा करने का यत्न किया है। 'गुरू नानक प्रकाश' और 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' जगत साहित्य जगत की महान प्राप्तियाँ हैं। भाई साहिब ने भारतीय ग्रंथों के काव्य-अनुवाद करके महान अनुवादकों में स्थान बना लिया है। अफ़सोस है कि उनकी इन महान रचनाओं का सही मूल्यांकन नहीं हो सका, क्योंकि सिक्ख विद्वान इन्हें हिंदी या ब्रज भाषा के ग्रंथ मानकर नज़रअंदाज़ कर देते हैं और हिंदी के विद्वान गुरमुखी से परिचित न होने के कारण पंजाबी रचना मान कर चुप धारण कर लेते हैं। इन ग्रंथों का गंभीर विवेचन हिंदी और पंजाबी दोनों भाषाओं में होना चाहिए।

. . . विचि बाणी अंम्रितु सारे।।

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

मानव सभ्यता का जैसे-जैसे विकास होता गया, मानवीय मूल्यों का उससे अधिक तेजी से पतन होता गया। सबको समानता और सम्मान का भाव देने वाला धर्म पंख लगा कर उड़ गया। इसका परिणाम हुआ कि जो न्याय करने वाले थे वे कसाई हो गये। पवित्रता कहीं बची नहीं। सच और न्याय अदृश्य हो गये। इसे 'कलियुग' कहा गया। जीवन को देखने की दृष्टि ही उलट गई। विष का असर करने वाले विचार और व्यवहार मनुष्य को प्रिय हो गये। सत् असत् का भेद करने की योग्यता और रुचि ही नहीं रह गई थी :

कालु नाही जोगु नाही नाही सत का ढबु।।
थानसट जग भरिसट होए डूबता इव जगु।।

(पन्ना ६६२)

अज्ञान और भ्रम में डूब रहे संसार को बचाने के लिये गुरु साहिबान ने गुरबाणी के रूप में एक शाश्वत अस्त्र दिया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु अरजन साहिब द्वारा गुरबाणी को संयोजित कर संपादित किए आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब को संपूर्ण किया और श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में गुरुआई पर आसीन करने का एक महान और अद्वितीय उपकार किया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी कलियुग की हर विषमता का निदान है। यह सत् और असत् का भेद करना सिखाती है, सच को समझ पाने की सामर्थ्य देती है, सच की राह पर चलने की प्रेरणा देती है और विकारों से दूर होने का बल प्रदान करती है। जीवन मनुष्य के सामने सबसे बड़े रहस्य की तरह खड़ा था। इतने भ्रम, इतनी कपोल कल्पनायें थीं कि जीवन जीने की कोई निश्चित राह ही नजर नहीं आती थी। कोई गृहस्थी में जूझ रहा था, कोई घर-परिवार का त्याग कर वन में, कन्दराओं में चला गया था। किसी ने मौन धारण कर लिया था और कोई वस्त्रहीन विचर रहा था। किसी को सांसारिक पदार्थों का मोह था और कोई मुक्ति के मोह में पड़ा हुआ था। गुरबाणी ने इसका सम्पूर्ण निदान संसार को दिया :

इहु जगतु ममता मुआ जीवण की बिधि नाहि।।
गुर कै भाणै जो चलै तां जीवण पदवी पाहि।।

(पन्ना ५०८)

सभी लोग जीवन को अपनी-अपनी दृष्टि से देख रहे थे और अपनी इच्छानुसार जीवन का उद्देश्य तय कर रहे थे। इससे भ्रम तो व्याप्त हुए

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९*

ही, समाज वर्णों, वर्गों, जातियों, संप्रदायों, निर्धन-धनवान, बलवान-निर्बल आदि में बंट गया। विभाजन की ये खाईयां समय के साथ गहरी होती चली गईं। अधिकांश लोग जीवन को गंभीरता से न लेकर व्यर्थ गंवा रहे थे। जीवन का अर्थ तन में प्राणों का होना और सांसों का चलना माना जाता था। गुरु साहिबान ने जीवन के इस लक्षण को ही अस्वीकृत कर दिया। उन्होंने जीवन को परमात्मा के साथ जोड़ कर देखा। जीवित वही हैं जिनके मन में परमात्मा बस रहा है। बाकी सारे लोग जीवित होते हुए भी मृतक के समान हैं। इससे दो महत्वपूर्ण स्थापनायें हुईं। एक तो यह कि मनुष्य और परमात्मा के बीच सीधा संबंध स्थापित हुआ और दूसरा यह कि परमात्मा का स्थान मनुष्य के जीवन में सबसे प्रमुख हो गया। धार्मिक स्थलों, तीर्थों, कर्मकांडों में ढूँढने के स्थान पर परमात्मा को मन में ढूंढना था। यह कार्य किसी अन्य के माध्यम से नहीं मनुष्य को स्वयं ही करना था। परमात्मा को मन में ऐसे सहेजना था जैसे मनुष्य जीवित रहने के लिये सांसें सहेजता है।

सो जीविआ जिसु मनि वसिआ सोइ ।।
नानक अवरु न जीवै कोइ ।।
जे जीवै पति लथी जाइ ।।
सभु हरामु जेता किछु खाइ ।।
राजि रंगु मालि रंगु ।।
रंगि रता नचै नंगु ।।
नानक ठगिआ मुठा जाइ ।।
विणु नावै पति गइआ गवाइ ।। (पन्ना १४२)

उपरोक्त वचन श्री गुरु नानक साहिब का है जिसमें वे सचेत करते हैं कि यदि मनुष्य ने मन में परमात्मा को धारण कर जीवन को धर्म के अनुकूल नहीं बनाया है तो ऐसा जीना जीवन के बहुमूल्य अवसर को गंवा देना है। ऐसा जीवन जीते हुए मनुष्य जो भी करता है वह विष के समान ही होता है। सांसारिक रंग-तमाशों में जीवन व्यतीत करना बाजार में नग्न होकर नाचने जैसा है। यदि जीव को मनुष्य -जन्म प्राप्त हुआ है तो इसका पूरा सदुपयोग करे। वह मन को परमात्मा के साथ जोड़े और सच को जीवन का आधार बना ले। इसी में जीवन की सफलता और समृद्धि है।

मन मेरिआ जनमु पदारथु पाइ कै
इकि सचि लगे वापारा ।।
सतिगुरु सेवनि आपणा अंतरि सबदु अपारा ।।
अंतरि सबदु अपारा हरि नामु पिआरा
नामे नउ निधि पाई ।।
मनमुख माइआ मोह विआपे दूखि संतापे
दूजै पति गवाई ।।
हउमै मारि सचि सबदि समाणे
सचि रते अधिकाई ।।
नानक माणस जनमु दुलंभु है
सतिगुरि बूझ बुझाई ।। (पन्ना ५६९)

मनुष्य जिस जीवन का मूल्य नहीं समझ रहा वह दुर्लभ है। जीवन का महत्व गुरु की शरण में आने पर ही ज्ञात होता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब

की बाणी जीवन को सच्चे परिप्रेक्ष्य में देखने का सबसे सुयोग्य माध्यम है। जब तक मनुष्य के मन के विकार और भ्रम दूर नहीं होते वह सच के निकट नहीं आ पाता। सतिगुरु की सेवा में रत होने से जीवन के परम तत्व मन में घर करने लगते हैं और परमात्मा से प्रीति उपजने लगती है। यही जीवन का मनोरथ है। मन की यह अवस्था सतिगुरु ही बना सकता है।

गुर कै सबदि बनावहु इहु मनु।।
गुर का दरसनु संचहु हरि धनु।।१।।
ऊतम मति मेरै रिदै तूं आउ।।
धिआवउ गावउ गुण गोविंदा
अति प्रीतम मोहि लागै नाउ ।। (पन्ना ३७७)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी मन की श्रेष्ठ अवस्था बनाने का कार्य करती है और परमात्मा से जोड़ती है। मनुष्य की सबसे उत्तम कामना है कि सुबुद्धि उसके अंदर बस जाये। उसके अंदर ऐसी मति और प्रेरणा पैदा हो जिससे वह दिन-रात परमात्मा की आराधना कर सके और इस आराधना में उसे रस प्राप्त हो अर्थात् परमात्मा के लिये प्रीति का भाव भरपूर हो जाये।

मनुष्य सदैव अपने तन से सर्वाधिक प्रेम करता है और उसे सजाने, संवारने में लगा रहता है। जो तन उसे बाहर से दिख रहा है उसे ही मनुष्य ने सब कुछ मान लिया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में तन को सम्पूर्णता में देखते हुए उसका महत्व बताया गया है। सामान्य रूप से एक दिन के समय को आठ पहर और पूरी सृष्टि को आठ खंडों में बांटा गया है। गुरबाणी मनुष्य के शरीर को नौवें खंड के रूप में देखती है :

अठी पहरी अठ खंड नावा खंडु सरीरु।।
तिसु विचि नउ निधि नामु एकु
भालहि गुणी गहीरु।। (पन्ना १४६)

जीव को मनुष्य-जन्म में जो शरीर मिलता है वह भी अनमोल है। वह उसी तरह गुणों से युक्त है जैसे सृष्टि के नौ खंड भांति-भांति के आश्चर्यों से भरे हुए हैं। मनुष्य का सदा से स्वभाव रहा है कि वह सृष्टि के रहस्य खोजता रहता है। उसने धरती के अंदर कितने ही बहुमूल्य पदार्थ खोज निकाले। इसी प्रकार उसने जल में अनमोल खोजें की हैं और कर रहा है। मनुष्य का शरीर इससे भी अधिक मूल्यवान तत्वों से भरा हुआ है। इसमें संसार की सबसे अमूल्य निधि परमात्मा का निवास है, किन्तु इसे कोई बड़ा जती-तपी ही खोज पाता है। संसार में सदा से ही धर्म-कर्म होते आये हैं। बड़े-बड़े तपस्वी, सन्यासी, सिद्ध, महात्मा हुए, जिन्होंने अनेकानेक विधियाँ प्रचलित कर उन्हें परमात्मा को पाने का मार्ग बताया। इससे पाखंड अधिक फैला और समाज मूल तत्वों को उपेक्षित करता गया। गुरु साहिबान ने इसका खंडन करते हुए मन के अंदर ही परमात्मा को खोजने की बात की :

बाहरि मूलि न खोजीऐ घर माहि बिधाता।।
(पन्ना ९५३)

मनुष्य का जीवन और उसका तन दोनों ही

दुर्लभ हैं। मानव जीवन एक अवसर है परमात्मा को पाने के लिये और मानव-तन उस परमात्मा का मन्दिर है जहां उसे खोजना है। यह जीवन वास्तव में उसे परमात्मा की कृपा से ही मिला है। श्री गुरु अमरदास साहिब ने वचन किये कि जब परमात्मा ने तन में जीवात्मा को स्थापित किया तभी मनुष्य का संसार में जन्म संभव हुआ। मनुष्य भले ही अपने सांसारिक माता-पिता को जान रहा है जिनके रक्त और बिन्द के संयोग से उसकी उत्पत्ति हुई है, किन्तु माता-पिता तो हर दृष्टि से परमात्मा ही है, जो उसे संसार में लेकर आया है। मनुष्य संसार में आते ही उस परमात्मा को भूल जाता है। जब सतिगुरु की कृपा होती है तभी वह अपने सृजनहार परमात्मा से जुड़ता है। गुरु साहिब ने कहा कि जो तन और तन के अंदर जीव परमात्मा ने कृपा करके दिया है उसका उपयोग परमात्मा के अनुकूल करना ही परमात्मा को पाने की राह पर चलना है। मनुष्य अपने नेत्रों से सृष्टि में परमात्मा की सर्वव्यापकता को देखे। वह अपने कानों से परमात्मा की स्तुति अर्थात् पावन विचार ही सुने, जिससे उसके अंतर की निर्मलता बनी रहे। परमात्मा ने मनुष्य के तन में जीवात्मा को स्थिर करते हुए उसे इन्द्रियों का बल प्रदान किया है, किन्तु वह द्वार बंद रखा है जिससे परमात्मा तक पहुंचा जा सके। यह द्वार गुरु के ज्ञान और कृपा से ही खोला जा सकता है। गुरबाणी ने मनुष्य को अपने तन और मन की शक्ति पर किसी भी तरह के अहंकार से सचेत करते हुए उसे सदा विनम्रता और प्रार्थना की अवस्था बनाये रखने को कहा। जब तक मन में किसी भी तरह का अहंकार, विकार है, परमात्मा को पाना संभव नहीं। जब अहंकार जायेगा तभी परमेश्वर से मेल हो सकेगा- ''हऊमै जाई ता कंत समाई'' श्री गुरु नानक साहिब ने मनुष्य को यथार्थ के दर्शन कराते हुए कहा कि उसमें तो अवगुण ही भरे हुए हैं, कोई गुण नहीं है, जिससे वह परमात्मा को रिझा सके :

सभि अवगण मै गुणु नही कोई ।।
किउ करि कंत मिलावा होई ।। (पन्ना ७५०)

परमात्मा की कृपा किसी चतुराई, किसी युक्ति से नहीं मिलती। उसे तो सच, संयम, दया, संतोष जैसे गुणों से ही पाया जा सकता है।

सहजि सीगार कामणि करि आवै ।।
ता सोहागणि जा कंतै भावै ।। (पन्ना ७५०)

मनुष्य की तुलना यहां सुहागिन स्त्री से की गई। विवाहिता स्त्री का सुहागिन होना तभी सफल माना जाता है जब वह अपने पति का मन मोह लेती है। मानव जीवन तभी सफल है जब उसके गुण परमात्मा को मोह लें। मनुष्य सच को धारण करे और गुरु-उपदेश के भय के अंदर रहे अर्थात् गुरु की शिक्षा पर जीवन भर दृढ़ता से चले।

गुणों और सद्कर्मों का संग्रह ही मनुष्य की सबसे बड़ी संपत्ति है। वे कौन-से गुण हैं जिनसे मनुष्य का जीवन-उद्देश्य पूरा होता है। उनका

वर्णन श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विस्तार से मिलता है। मनुष्य के कैसे कर्म उसके इन गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसकी व्यख्या भी की गई है। यही कारण था कि गुरसिक्ख के लिये नित्य गुरबाणी का पाठ जीवन की मर्यादा बन गया। नित्य से आशय दिन में एक बार नहीं या सुबह और शाम नहीं, हर पल और हर सांस के साथ परमात्मा का स्मरण करना था। श्री गुरु नानक साहिब ने मनुष्य के जीवन की अवधि मात्र एक पल की बताई :

हम आदमी हां इक दमी
मुहलति मुहतु न जाणा।।
नानकु बिनवै तिसै सरेवहु जा के जीअ पराणा।।
अंधे जीवना वीचारि देखि केते के दिना।।

(पन्ना ६६०)

श्री गुरु नानक साहिब ने मनुष्य की चेतना को झिंझोड़ते हुए कहा कि वह इस पर गंभीरता से विचार करे कि उसे कितने दिन संसार में जीना है। क्या पता सिर पर डोलता हुआ काल कब उसे अपना ग्रास बना ले! कोई भी इसे आज तक जान नहीं पाया है। उसका जीवन उसी पल का जिसमें वह सांस ले रहा है। उसके पास अधिक समय नहीं है और किसी बात के लिये कोई ख़ास अवसर नहीं निश्चित किया गया है, इसलिए जो पल सामने है उसे उस परमात्मा की भक्ति में लगा देने में ही मनुष्य का हित है, जिसने उसे यह जीवन दिया है। यह सदियों से चली आ रही जीवन के चार आश्रमों की अवधारणा का जोरदार खंडन था, जिसमें जीवन को ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास में विभाजित किया गया था। इसमें मनुष्य की आयु सौ वर्ष मान ली गई थी और प्रत्येक आश्रम के लिये पच्चीस वर्ष निर्धारित कर दिये गये थे। इसमें पचहत्तर से सौ वर्ष की अवस्था को मोक्ष-प्राप्ति का काल माना गया था। गुरबाणी ने जीवन का हर पल परमात्मा को समर्पित करने की बात की- ''सासि सासि सिमरहु गोबिंद॥ मन अंतर की उतरै चिंद॥'' मन में विकारों की लगी मैल को उतारने के लिये पल-पल परमात्मा के पास प्रार्थना करनी होगी तभी निर्मलता प्राप्त होगी। यह मैल जन्मों-जन्मों की है और तभी उतरती है जब श्वास-श्वास नाम जपने वाले पर परमात्मा स्वयं कृपा करता है :

गुर परसादि नामि मनु लागा।।
जनम जनम का सोइआ जागा।।

(पन्ना १८४)

मन की इस जन्मों-जन्मों के पापों की मैल को उतारने के लिये मनुष्य द्वारा किसी आयु विशेष अथवा अवसर विशेष की प्रतीक्षा करना जीवन को व्यर्थ करना है। जो जीवन परमात्मा की शरण, परमात्मा की ओट के बिना जीया जाये उस जीवन को धिक्कार है- ''बिनु नामै ध्रिगु जीवासु॥'' गुरबाणी ने सदा ही परमात्मा में लीन रहने और गुरु के दिखाये मार्ग पर चलने वाले को भाग्यशाली कहा है:

धंनु वडभागी वड भागीआ

जो आइ मिले गुर पासि।। *(पन्ना ४०)*

सतिगुरु की बाणी अमृत सरोवर की तरह है। जो सतिगुरु की शरण में आता है और गुरबाणी के अमृत सरोवर में जीवन को उतार देता है उसकी जन्मों-जन्मों की मैल धुल जाती है अर्थात् अज्ञानता और भ्रम दूर हो जाते हैं, सत्य का, परमात्मा का मार्ग मिल जाता है :

सतिगुरु पुरखु अंम्रित सरु
वडभागी नावहि आइ।।
उन जनम जनम की मैलु उतरै
निरमल नामु द्रिड़ाइ।। *(पन्ना ४०)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी अमृत के समान फल देने वाली है। पौराणिक कथाओं में अमृत को जीवनदायी पेय माना गया था। गुरबाणी गुरसिक्ख के मन में परमात्मा के लिये भाव और भय उत्पन्न करती है। इससे उसमें जीवन के लक्षण प्रकट होने लग जाते हैं। मनुष्य परमात्मा का स्मरण करे, विकारों, माया के मोह से दूर होकर गुणों को धारण करे! वह परमात्मा के भय में रह कर ऐसा आचरण करे जो परमात्मा की इच्छा के अनुकूल हो, यही जीवन की चेतना है और जीवन के अवसर का सदुपयोग है :

बिलावलु तब ही कीजीऐ जब मुखि होवै नामु।।
राग नाद सबदि सोहणे जा लागै सहजि धिआनु।।
(पन्ना ८४९)

जीवन का सुख परमात्मा को जीवन के केंद्र में रखने से ही है। यह असीम सुख की अवस्था है। श्री गुरु नानक साहिब ने बसंत ऋतु का उदाहरण देते हुए कहा था कि इस ऋतु के आने से चारों ओर प्रफुल्लता छा जाती है। उन्होंने कहा कि वह मन सदा ऐसे ही प्रफुल्लित रहता है जिसमें परमात्मा के लिये प्रीति बसी होती है :

माहा माह मुमारखी चड़िआ सदा बसंतु।।
परफड़ु चित समालि सोइ सदा सदा गोबिंदु।।
(पन्ना ११६८)

जीवन को कोई बड़ा रहस्य, विषम, अगम्य मानने वाले, जीवन को सांसारिक सुखों की पूर्ति में लगाने वाले अथवा इसे निरुद्देश्य सोकर और खाकर बिता देने वाले लोगों के लिये श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी वास्तव में अमृत है, जो जीवन का उद्देश्य और मार्ग बता कर अमृत की तरह उनमें जीवन के लक्षण पैदा कर देती है तथा परमात्मा से मेल का चाव भर देती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब को सम्पूर्ण कर गुरआई पर आसीन करने का श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का उपकार अद्वितीय है। उन्होंने एक अथाह अमृत सरोवर मानव समाज को सौंपा जो मानव-मूल्यों को सदा जीवित रखेगा।

गुरबाणी इसु जग महि चानणु . . .

*-डॉ. परमजीत कौर**

आइओ सुनन पड़न कउ बाणी।।
नामु विसारि लगहि अन लालचि
बिरथा जनमु पराणी।। *(पन्ना १२१९)*

श्री गुरु अरजन देव जी ने सर्वसाझीवालता के प्रतीक उच्च आत्मिक जीवन के पथ-प्रदर्शक, मुक्ति-दाता श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना की। इस सर्वसाझे धर्म-ग्रंथ में स्वउच्चरित बाणी सहित पहले चार गुरु साहिबान की बाणी, १५ भक्तों, ११ भट्टों तथा गुरसिक्खों की बाणी शामिल करके सन् १६०४ में पहला प्रकाश श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर साहिब में पीढ़ी साहिब पर करके, स्वयं नीचे आसन ग्रहण करके गुरु वाला आदर-सम्मान दिया। उस समय श्री गुरु ग्रंथ साहिब को 'पोथी साहिब' कहा जाता था। श्री गुरु अरजन देव जी ने स्वयं फरमान किया है :

पोथी परमेसर का थानु ।। *(पन्ना १२२६)*

आज जीवन के मूल्य बदल गए हैं। प्यार सच्चाई, एकता तथा भाईचारे के स्थान पर वैर-विरोध, ईर्ष्या, भ्रष्टाचार तथा नफरत का बोलबाला है। हर जगह असुरक्षा की भावना देखी जाती है। ऐसे समय में गुरबाणी में दिए गए उपदेश सारी मानवता के लिए लाभदायक हैं। गुरु साहिबान ने मनुष्य-मात्र के कल्याण को प्रमुखता दी है। श्री गुरु अमरदास जी प्रभु के समक्ष प्रार्थना कर रहे हैं, हे प्रभु! विकारों की अग्नि में जल रहे इस संसार को कृपा करके, जिस तरीके से भी यह बच सकता हो, उसी प्रकार बचा लो :

जगतु जलंदा रखि लै
आपणी किरपा धारि।।
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि।।
(पन्ना ८५३)

श्री गुरु अरजन देव जी अरदास कर रहे हैं :

सभे जीअ समालि अपणी मिहर करु।।
अंनु पाणी मुचु उपाइ दुख दालदु भंनि तरु।।
(पन्ना १२५१)

गुरबाणी में जात-पांत, मेर-तेर के सारे भेदभावों को छोड़कर सारी मानवता को एक समान जानने का आदेश दिया गया है। जैसे माला के एक धागे में कई मोती पिरोये होते हैं, इसी प्रकार जगत के सारे जीव रूप मोती परमात्मा की सत्ता रूप धागे में पिरोए हुए हैं :

एकै सूति परोए मणीए।।
गाठी भिनि भिनि भिनि भिनि तणीए।।
फिरती माला बहु बिधि भाइ।।
खिंचिआ सूतु त आई थाइ।। *(पन्ना ८८६)*

गुरु साहिबान ने किसी पर भी अपने मज़हब को थोपने के लिए दबाव नहीं डाला। केवल लोक-भलाई के लिए प्रेरित करते हुए अपने-अपने धर्म में सच्चा तथा पवित्र रहने का उपदेश दिया है। गुरु साहिब मुसलमानों को सच्चा

**६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— १३५००१, फोन : ९८१२३-५८१८६*

मुसलमान बनने के लिए समझाते हैं कि सर्वप्रथम जरूरी है कि मजहब से प्यार करना। अपनी कमाई में से कुछ अंश (दशमांश) जरूरतमंदों में बांट कर उपयोग करो! रब को ही सब कुछ करने वाला समझो! खुदी मिटा दो! रब द्वारा पैदा किए गए सारे मनुष्यों से प्रेम करो! दिल में सबके लिए दया को ही मक्का समझो! सबके पैरों की खाक बनकर रहना असल रोजा है :

— रब की रजाइ मंने सिर उपरि
करता मंने आपु गवावै।।
तउ नानक सरब जीआ मिहरंमति होइ
त मुसलमाणु कहावै।। *(पन्ना १४१)*
— मका मिहर रोजा पै खाका।। *(पन्ना १०८३)*

असल पंडित के बारे में श्री गुरु अरजन देव जी का कथन है :

सो पंडितु जो मनु परबोधै।।
राम नामु आतम महि सोधै।।
राम नाम सारु रसु पीवै।।
उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै।। *(पन्ना २७४)*

गुरसिक्खों को ताकीद कर रहे हैं, हे गुर सिक्खो! अपने अंदर से छल-कपट दूर करो! निर्मल होकर अकाल पुरख के नाम-सिमरन की कमाई करो!

हरि का मारगु गुर संति बताइओ
गुरि चाल दिखाई हरि चाल।।
अंतरि कपटु चुकावहु मेरे गुरसिखहु
निहकपट कमावहु हरि की हरि घाल
निहाल निहाल निहाल।। *(पन्ना ९७८)*

गुरबाणी में आए सभी धर्मों से सम्बंधित परमात्मा के नाम- राम, ठाकुर, नरहरी, बीठल क्रिशन, कृष्णा, अल्लाह, रघुनाथ, गोपाल आदि धार्मिक एकता की पुष्टि करते हैं।

धन-प्राप्ति की अंधी दौड़, अहंकार, भ्रष्टाचार, स्वार्थ आदि मनुष्य के संताप के मुख्य कारण हैं। धन जीवन के लिए जरूरी है, मगर उतना ही सुखदायक है, जितना मेहनत से कमाया जाता है। अनुचित साधनों से एकत्र किया गया धन अर्थ न रहकर अनर्थ बन जाता है। श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार किरत करनी, नाम जपना तथा बांट कर खाना सफल जीवन का आधार है। श्री गुरु नानक देव जी के किरत (श्रम) के सिद्धांत में मेहनत के साथ सत्य भी सम्मिलित है। गुरु साहिब ने गृहस्थ में रहकर मेहनत की कमाई करके उसमें से जरूरतमंदों की सहायता करने का आदेश दिया है :

घालि खाइ किछु हथहु देइ।।
नानक राहु पछाणहि सेइ।। *(पन्ना १२४५)*

गुरबाणी में समझाया गया है कि पर-धन का लोभ त्यागना ही कल्याणकारी है। पराया हक मारना पाप है। जो ऐसा करता है वह कभी सुखी नहीं रह सकता :

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ।।
(पन्ना १४१)

किसी को दुख पहुंचा कर प्राप्त किया अन्न तथा सुख शरीर में विकार पैदा करता है। इससे मन तथा तन दोनों अपवित्र हो जाते हैं। मन की अपवित्रता लोभ तथा झूठ के रास्ते पर ले जाती है तथा परमात्मा से दूर कर देती है :

जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु।।
जो रतु पीवहि माणसा

तिन किउ निरमलु चीतु।। *(पन्ना १४०)*

गुरु साहिब ने मनुष्य को खाने-पीने या पहनने आदि के सांसारिक सुखों का बिलकुल त्याग कर सन्यास लेने का उपदेश नहीं दिया। आप जी ने समझाया है कि जिन पदार्थों को खाने से, जिन सुखों को भोगने से, जिन वस्त्रों को पहनने से मन में विकार पैदा हों तथा मन परमात्मा के भय-अदब को भुला कर गलत रास्ते पर चल पड़े, वे सुख दुखों का कारण बन जाते हैं, इसलिए वे त्याग देने चाहिए :

बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु।।
जितु खाधै तनु पीड़ीऐ
मन महि चलहि विकार।। *(पन्ना १६)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में किरत करते हुए, माया से निर्लेप रहकर प्रभु-सिमरन का उपदेश दिया गया है तथा दृढ़ करवाया गया है कि जिंदगी के असल मनोरथ प्रभु-मिलाप को प्राप्त करने के लिए परमात्मा के नाम का सिमरन ही एकमात्र साधन है। यह आत्मा की खुराक है तथा जीवन को सुचारू रूप से चलाने में सहायक है :

प्राणी एको नामु धिआवहु।।
अपनी पति सेती घरि जावहु।। *(पन्ना १२५४)*

गुरबाणी द्वारा आध्यात्मिक मार्ग का दिशा-निर्देश वैज्ञानिक ढंग से किया गया है। इस विचार को दृढ़ करवाया गया है कि आध्यात्मिकता का आधार सदाचार है। इस लोक को सुधारने के लिए प्रेरित किया गया है। जीवन को सफल बनाने के लिए सच्चाई, विनम्रता, संतोष, सेवा, मधुरता, क्षमा, सहनशीलता, परोपकार की भावना आदि गुणों का होना आवश्यक है। इन गुणों को धारण करने तथा झूठ बोलने, निंदा-चुगली करने, छल-कपट, ईर्ष्या-द्वेष, पर-धन, पर-तन का लोभ, काम, क्रोध, मोह, अहंकार आदि दुर्गुणों से छुटकारा पाने की ताकीद की गई है। श्री गुरु अरजन देव जी धर्म के लक्षणों के बारे में समझाते हैं :

नह बिलंब धरमं बिलंब पापं।।
द्रिड़ंत नामं तजंत लोभं।।
सरणि संतं किलबिख नासं
प्रापतं धरम लख्यिण।।
नानक जिह सुप्रसंन माधवह।। *(पन्ना १३५४)*

प्रभु के साथ जुड़ने के लिए सत्य के रास्ते पर चलना आवश्यक है। सत्य का मार्ग प्रभु के नाम को दृढ़ करवाते हुए प्रभु तक पहुंचने में सहायक होता है। सांसारिक पदार्थों की पकड़ असत्य पदार्थों के प्रति मोह पैदा करती है, मन विकारग्रस्त रहता है, मलिन रहता है; जीवन अवगुणों से भरा रहता है। शरीर को भिन्न-भिन्न तीर्थों पर जाकर धोने से अवगुण दूर नहीं होते। गुरु साहिब समझाते हैं :

— तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है।।
तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु है।।
(पन्ना ६८७)
— किआ जपु किआ तपु किआ ब्रत पूजा।।
जा कै रिदै भाउ है दूजा।। *(पन्ना ३२४)*

आज धर्म के बारे में अपने दृष्टिकोण को बदलने की जरूरत है। शकुन-अपशकुन, वहम-भ्रम, तारीख-दिन आदि का विचार, श्राद्ध आदि या कुछ धार्मिक समझे जाने वाले रीति-रिवाज, रस्मों या अंधविश्वासों को धर्म समझ लेना ठीक

नहीं है। ये भ्रम तथा अंधविश्वास अज्ञानता के उस मार्ग पर ले जाते हैं, जो परमात्मा की तरफ नहीं जाता। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पवित्रता तथा सदाचारी जीवन पर बल दिया गया है :

सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु।।

(पन्ना ६२)

श्री गुरु नानक देव जी समझा रहे हैं कि परमात्मा सच्चाई की भेंट स्वीकार करता है। जीवन-राह पर मन, सत्य तथा कर्म द्वारा सत्यता से चलना ही प्रभु की भक्ति है। सत्य तथा संतोष का जीवन व्यतीत करना ही उसके आगे प्रार्थना करना है :

तुधनो निवणु मंनणु तेरा नाउ।।
साचु भेट बैसण कउ थाउ।।
सतु संतोखु होवै अरदासि।।
ता सुणि सदि बहाले पासि।। *(पन्ना ८७८)*

गुरबाणी में केवल प्रभु-मिलाप, एकता, भाईचारे, समानता, सिमरन, सेवा आदि का ही उपदेश नहीं दिया गया, बल्कि सामाजिक कुरीतियों का विरोध भी किया गया है। मदिरा आदि नशों के सेवन की आदत के कारण नौजवान वर्ग भी भ्रष्टाचार की दलदल में धंसता जा रहा है। नशों के सेवन से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, मन वश में नहीं रहता, अधीनता, आलस्य, कमजोरी तथा अन्य कई तरह के रोगों से शरीर ग्रस्त हो जाता है। मानसिक तनाव, अशांति तथा झगड़े-क्लेश के कारण आचरण भ्रष्ट हो जाता है। अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए गलत तरीके अपना लिए जाते हैं। गुरु साहिबान ने नशों से वर्जित किया है :

— अंम्रित का वापारी होवै
किआ मदि धूधै भाउ धरे।। *(पन्ना ३६०)*
— जितु पीतै मति दूरि होइ
बरलु पवै विचि आइ।।
आपणा पराइआ न पछाणई
खसमहु धके खाइ।। *(पन्ना ५५४)*

दहेज लेना ऐसी कुरीति है, जिसके कारण बड़े-बड़े हादसे हो जाते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इसका विरोध किया गया है। श्री गुरु रामदास जी के अनुसार सांसारिक धन तथा सामान आदि का दहेज लेकर दिखावा करने वाले मनमुख कहे जाते हैं। हरि का नाम रूप दहेज ही देना व लेना चाहिए। इस दहेज का मुकाबला अन्य कोई दहेज नहीं कर सकता :

होरि मनमुख दाजु जि रखि दिखालहि
सु कूड़ु अहंकारु कचु पाजो।।
हरि प्रभ मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो।।

(पन्ना ७८७)

स्त्री और पुरुष जीवन-रथ के दो पहिए हैं। जीवन को आनन्दमयी बनाने के लिए दोनों का सन्तुलित होना आवश्यक है। दोनों को बराबर का सम्मान देना आवश्यक है। गुरु साहिब ने स्त्री को बहुत सत्कार दिया है। श्री गुरु नानक देव जी का कथन है कि जो स्त्री संत, महात्मा, ऋषि-मुनि तथा राजा-महाराजा को जन्म देती है वह हेय कैसे हो सकती है? उसका अपमान कैसे किया जा सकता है?

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान।।

(पन्ना ४७३)

शुभ गुणों से युक्त होने का भी जिक्र किया

गया है :

बतीह सुलखणी सचु संतति पूत।।

(पन्ना ३७१)

गुरबाणी को प्यार व श्रद्धा के साथ सुनना तथा पढ़ना चाहिए। बाणी इस लोक तथा परलोक में जीवन का आधार बनती है :

गुर की बाणी सिउ लाइ पिआरु।।
ऐथै ओथै एहु अधारु।। *(पन्ना १३३५)*

गुरबाणी को प्रेम के साथ पढ़ने, सुनने, तथा गायन करने से, गुरबाणी के अनुसार जीवन बनाने से जीवन सुखों से भरपूर हो जाता है :

— गुरबाणी गावह भाई।।
ओह सफल सदा सुखदाई।। *(पन्ना ६२८)*
— भगति भंडार गुरबाणी लाल।।
गावत सुनत कमावत निहाल।। *(पन्ना ३७६)*

गुरबाणी को श्रद्धा तथा प्रेम के साथ सुनने व पढ़ने के साथ-साथ उस पर विचार करना भी आवश्यक है। गुरबाणी की विचार न करने वाला जीव ज्ञान की बातें तो करता है, मगर उसके अंदर आत्मिक जीवन की समझ नहीं आती। उसका सारा जीवन भ्रम, भटकना तथा दुख में ही व्यतीत हो जाता है :

न सबदु बूझै न जाणै बाणी।।
मनमुखि अंधे दुखि विहाणी।। *(पन्ना ६६५)*

सतिगुरु की मति ही जीवन के लिए श्रेष्ठ रास्ता है। जो मनुष्य गुरबाणी की विचार करके गुरबाणी के अनुसार अपना जीवन बनाता है, उसको प्रभु पर विश्वास हो जाता है। उसका अहं समाप्त हो जाता है। वह गलत मार्ग पर ले जाने वाली अपनी दुर्मति का त्याग कर देता है तथा कामादि पाँच शत्रुओं के मुकाबले अपने मन को मजबूत बना लेता है। उसका जीवन पवित्र हो जाता है। गुरबाणी में बताए गए मार्ग पर चलते हुए यदि परमात्मा में ध्यान लगाया जाए तो मन स्थिर हो जाता है :

गुरमुखि होवै सु गिआनु ततु बीचारै
हउमै सबदि जलाए।।
तनु मनु निरमलु निरमल
बाणी साचै रहै समाए।। *(पन्ना ९४६)*

परंतु कोई विरला ही गुरमुख बाणी की विचार करता है :

बाणी बिरलउ बीचारसी जे को गुरमुखि होइ।।
इह बाणी महा पुरख की निज घरि वासा होइ।।

(पन्ना ९३५)

संक्षेप में कह सकते हैं कि सतिगुरु की बाणी जीवन-मार्ग में प्रकाश करती है। यह परमात्मा की कृपा से मनुष्य के मन में बसती है। जिसके हृदय में बस जाती है वह इस बाणी द्वारा आत्म-स्वरूप में टिक जाता है :

गुरबाणी इसु जग महि चानणु
करमि वसै मनि आए।। *(पन्ना ६७)*

गुरबाणी को मन में बसाकर जिन मनुष्यों के हृदय में नाम का खजाना प्रकट हो जाता है उनके मुख परमात्मा के दरबार में सदा रोशन रहते हैं :

जिना अंदरि नामु निधानु है गुरबाणी वीचारि।।
तिन के मुख सद उजले तितु सचै दरबारि।।

(पन्ना १४२२)

सिक्ख धर्म और सूफी मत

–डॉ. नरेश*

सिक्ख धर्म और सूफी मत की निकटता दरसाने के लिए मैं अपनी बात अल्लामा इकबाल के एक शेर से शुरू करता हूं। इस शायर ने श्री गुरु नानक देव जी के बारे में कहा है :

फिर उठी आखिर सदा,
तौहीद की पंजाब से।
हिन्द को इक मर्दे-कामिल ने,
जगाया ख्वाब से।

इस शेर में तीन संकेत छिपे हुए हैं। पहला संकेत शेर के प्रथम शब्द 'फिर' में मौजूद है कि भारत सदा ही तौहीद अर्थात् 'एको ब्रह्म द्वितीया नास्ति' को मानता रहा है, लेकिन श्री गुरु नानक देव जी के समय तक आते-आते यह देश कर्मकाण्ड के चक्कर में पड़कर इस आदर्श को भूल चुका था और लोक-परलोक के उन सपनों में मग्न था, जो ब्राह्मणवाद दिखा रहा था। समाज का मिथ्या स्वप्न में लिप्त होना, दूसरा संकेत है। तीसरा संकेत है कि एक 'मर्दे-कामिल' (सम्पूर्ण मनुष्य) ने गहरी नींद सो रहे भारतीय समाज को जगाया था। ते 'मर्दे-कामिल' थे– श्री गुरु नानक देव जी।

मैं समझता हूं कि यदि इकबाल ने श्री गुरु नानक देव जी पर कविता न भी लिखी होती तो भी श्री गुरु नानक देव जी की महानता में कुछ अंतर नहीं आना था, लेकिन 'शाहीन' की कल्पना द्वारा इकबाल को जिस मर्दे-कामिल की तलाश थी, वह इतिहास के पन्नों में तथा जनसमूह के मानस में मौजूद था, तभी इकबाल के लिए उसको नज़रअंदाज़ करना सम्भव न था।

सिक्ख धर्म और सूफी मत का आपसी सम्बंध तो इसी बात से स्पष्ट है कि श्री गुरु नानक देव जी ने स्वयं पाकपटन जाकर बाबा शेख फरीद जी के बारहवें उत्तराधिकारी शेख इब्राहिम से बाबा शेख फरीद जी की बाणी प्राप्त की थी, जिसे बाद में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल किया गया। पीर बुड्ढन शाह और श्री गुरु नानक देव जी की कतिपय गोष्ठियां भी इस सम्बंध का प्रमाण हैं।

सूफी पीरों और सिक्ख गुरुओं का परस्पर प्रेम उस समय उदाहरण बन गया, जब पीर भीखन शाह ने उस दिन पश्चिम के स्थान पर पूरब की ओर मुंह करके नमाज अदा की, जिस दिन पटना साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का आगमन हुआ था। पीर जी के ऐसा करने पर हैरान शिष्यों ने इसका कारण पूछा तो पीर जी ने कहा, ''आज पूरब में अल्लाह के नूर ने जन्म लिया है।'' अगले दिन वे कई शिष्यों को साथ लेकर पटना साहिब की ओर चल दिए। पद-यात्रा करती हुई सूफियों की यह मण्डली जब पटना साहिब पहुंची तो

*१६९, सेक्टर-१७, पंचकूला– १३४०१९

बाल-गुरु जी इक्कीस दिन के हो गए थे। पीर जी ने बाल-गुरु जी के दर्शन करने की इच्छा व्यक्त की। उनकी श्रद्धा तथा कठिन श्रम देखकर गुरु साहिब को मामा किरपाल चंद बाहर ले आए। हज़रत ने मिट्टी के दो कुल्हड़ बाल-गुरु जी के सामने किए। उन्होंने अपने शिष्यों को बता रखा था कि एक कुल्हड़ में पानी भरा है और दूसरे में दूध। यदि बाल-गुरु जी ने दूध वाले कुल्हड़ पर हाथ रखा तो समझना कि वे हिंदुओं के गुरु बनेंगे और यदि पानी वाले कुल्हड़ पर हाथ रखा तो समझना मुसलमानों के पीर बनेंगे। बाल-गुरु जी ने अपने मामा की बांहों में उचक कर दोनों हाथ एक साथ दोनों कुल्हड़ों पर रख दिए। सूफी फकीर खुशी से झूम उठा। उसने घोषणा की कि यह 'साझा पीर' होगा।

इससे पूर्व सिक्ख धर्म और सूफी मत का सम्बंध उस समय अपनी पराकाष्ठा पर जा पहुंचता है जब सिक्खों के आध्यात्मिक स्थान श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की नींव हज़रत मियाँ मीर जी से रखवाई जाती है।

दार्शनिक धरातल पर भी इन दोनों मतों में बहुत साम्यता दिखाई देती है। श्री गुरु नानक देव जी का ੧ॐ से पहले '१' (एक) लिखना ब्रह्म और सृष्टि के एकत्व का परिचायक है। सूफियों की भांति श्री गुरु नानक देव जी का ब्रह्म 'अकाल पुरख' होने के सऽाथ-साथ रहीम, परवरदिगार, करीम, बेपरवाह, कादिर, रब, दाना-बीना भी है। सूफी दर्शन श्री गुरु नानक देव जी की इस स्थापना से शतप्रतिशत सहमत है कि :

नानक आपि कराए करे आदि हुकमि सवारणहारा।।

(पन्ना १४१)

कविता

परोपकारी भाई घन्हईआ जी

*-स. करनैल सिंघ सरदार पंछी**

किसी का दर्द लेकर शादमानी[१] कौन देता है ?
किसी को दान में अपनी जवानी कौन देता है ?
नज़र आया तुम्हें हर चेहरे में दशमेश का चेहरा,
वरना जंग में दुश्मन को पानी कौन देता है ?

हर इक घायल अदू[२] के लब पे इक फरियाद रखी थी।
सभी के अश्क[३] में इक तर-ब-तर रूदाद[४] रखी थी।
घन्हईआ जी ने दुश्मन को पिला कर प्यास भर पानी,
खुद अपने हाथ से रेड क्रॉस की बुनियाद रखी थी।

जो सच्चे दिल से निकले वो दुआ मन्जूर हो जाए।
तअज्जुब[५] क्या अगर ज़र्रा भी, कोह-ए-नूर[६] हो जाए।
घन्हईआ जी चले सिक्ख धर्म के पावन उसूलों पर,
मगर ऐ काश ! यह हर धर्म का दस्तूर हो जाए !

१. शादमानी : हर्ष
२. अदू : शत्रु
३. अश्क : आंसू,
४. रूदाद : दुख भरी गाथा,
५. तअजुब : आश्चर्य
६. कोह-ए-नूर : प्रकाश का पर्वत

**जेठी नगर, मालेर कोटला रोड, खन्ना (लुधियाना)— १४१४०१, फोन : ९४१७०-९१६६८*

ख़बरनामा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के
कर्मचारी बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए देंगे एक दिन का वेतन

श्री अमृतसर : १८ जुलाई : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा बाढ़-प्रभावित लोगों की मदद के लिए की जा रही सेवाओं में योगदान देते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के समूह कर्मचारियों ने अपना एक दिन का वेतन देने का फ़ैसला किया है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा एक बैंक खाता सार्वजनिक कर संगत को सहयोग करने की अपील की गई है, जिसके अंतर्गत शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कर्मचारियों ने यह पहलकदमी की है। इसके साथ ही शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सेवामुक्त कर्मचारियों की एसोसिएशन द्वारा ५१ हज़ार रुपए की राशि दी गई है, जबकि सिक्ख कथावाचक भाई जसविंदर सिंघ शहूर ने एक लाख रुपए का योगदान दिया है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कर्मचारियों द्वारा लिए गए फ़ैसले को मानव-हितैषी करार दिया। उन्होंने कहा कि कठिन समय में मानवता की मदद करना गुरु-दरसाए मार्ग पर चलने के समान है, जिसके अंतर्गत सबका फ़र्ज़ है कि बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए प्रयास किये जाएँ।

इसी दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय में स्थित सरदार तेजा सिंघ समुंदरी हॉल में एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने समूह कर्मचारियों के साथ सभा कर संस्था की तरफ से चलाई जा रही राहत-सेवाओं का मूल्यांकन किया और साथ ही प्रचंड तौर पर पीड़ित लोगों की सहायता के लिए कार्यों में निरंतरता बनाए रखने के लिए निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि सरकारों से बढ़कर कार्य शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी कर रही है और इसके कर्मचारी अपनी जान जोखिम में डाल कर बाढ़-पीड़ितों की सेवा कर रहे हैं।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल) ने कर्मचारियों के समक्ष अपने विचार व्यक्त करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा निभाई जा रही सेवाओं पर तसल्ली प्रकट की। इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सचिव स. प्रताप सिंघ ने समूह कर्मचारियों की सहमति से कर्मचारियों द्वारा एक दिन का वेतन बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए देने का एलान किया।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान के ओएसडी स. सतबीर सिंघ (धामी), अवर सचिव स. कुलविंदर सिंघ रमदास, स. बलविंदर सिंघ काहलवां, स. बिजै सिंघ, स. गुरिंदर सिंघ मथरेवाल, स. गुरमीत सिंघ बुट्टर, स. सिमरजीत सिंघ, उप सचिव स. तेजिंदर सिंघ पड्डा, स. गुरचरन सिंघ कुहाला, स. जसविंदर सिंघ जस्सी, प्रो. सुखदेव सिंघ, स. शाहबाज सिंघ, अधीक्षक स. मलकीत सिंघ बहिड़वाल, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की सेवामुक्त कर्मचारी

एसोसिएशन के प्रधान स. जोगिंदर सिंघ अदलीवाल, स. परविंदर सिंघ डंडी, स. इंदरपाल सिंघ, स. सुरिंदरपाल सिंघ, स. गोपाल सिंघ, स. महिताब सिंघ, पूर्व हेंड प्रचारक भाई जसविंदर सिंघ शहूर सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब के आदेश पर

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने गुरबाणी प्रसारण जारी रखने की पीटीसी से की अपील

श्री अमृतसर : २१ जुलाई : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सचखंड श्री हरिमंदर साहिब से गुरबाणी प्रसारण से सम्बन्धित सिक्ख संगत की भावनाओं के मद्देनज़र और श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार द्वारा किए गए आदेश के अनुसार अपना यूट्यूब चैनल शुरू करने के साथ-साथ अपना सैटेलाइट चैनल स्थापित होने तक पीटीसी चैनल के प्रबंधकों को गुरबाणी प्रसारण जारी रखने की अपील की है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल) ने एक बयान में कहा कि २३ जुलाई, २०२३ को पीटीसी चैनल का इकरारनामा ख़त्म होने के कारण शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा अपने यूट्यूब/ वेब चैनल पर २४ जुलाई, २०२३ से गुरबाणी प्रसारण की सेवा शुरू की जायेगी, परंतु विश्व भर की संगत की तरफ से की जा रही माँग पर जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को अपना चैनल स्थापित करने तक इस चैनल के माध्यम से भी प्रसारण-सेवा जारी रखने का आदेश किया है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी जत्थेदार साहिब के इस आदेश और संगत की भावनायों की कद्र करती है, जिसके अंतर्गत शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी के साथ विचार-विमर्श कर फ़िलहाल पीटीसी को भी प्रसारण सेवा जारी रखने के लिए कहा गया है।

उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अपने वेब चैनल के साथ-साथ सैटेलाइट चैनल जल्द स्थापित करने के लिए भी विशेष रूप से यत्न कर रही है। इसे लेकर सूचना और प्रसारण मंत्रालय को पत्र लिख कर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शिष्टमंडल को मुलाकात के लिए समय देने के लिए कहा गया है, ताकि आवश्यक कार्यवाही आरंभ की जा सके। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी २४ जुलाई से यूट्यूब/ वेब चैनल के माध्यम से अमृत बेला से गुरबाणी प्रसारण शुरू करेगी, जिस सम्बन्ध में २३ जुलाई को गुरु साहिब का ओट-आसरा लेने के लिए श्री अखंड पाठ साहिब के भोग डाले जाएंगे। इस समागम में हाज़िरी भरने के लिए पंथक जत्थेबंदियों और प्रमुख शख़्सियतों को न्योता-पत्र भेजे गए हैं। इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. बलदेव सिंघ कायमपुर, कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य स. सुरजीत सिंघ तुगलवाल भी उपस्थित थे।

मस्सा रंघड़ श्री अमृतसर साहिब के इलाके का हाकिम था। वह श्री हरिमंदर साहिब में चारपाई बिछा कर हुक्का पीता तथा वेश्याओं को नचाता था। भाई महिताब सिंघ तथा भाई सुक्खा सिंघ ने बुड्ढा जौहड़ (राजस्थान) से आकर इस बेअदबी का बदला लेने के लिए भरी महफिल में मस्से रंघड़ का सिर काट कर बरछे पर टाँग लिया तथा ले जाकर खालसा जी के सम्मुख पेश किया।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि श्री हरिमंदर साहिब की मान-मर्यादा को जब भी किसी हस्ती ने सत्ता के नशे में चूर होकर धूमिल करने का यत्न किया, सिक्खों ने उस हस्ती का इस जहां से नामोनिशां मिटा दिया।

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN September 2023

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

सारागढ़ी के युद्ध का दृश्य

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh
Date : 7-9-2023